मार्च 2019

दादावाणी

Retail Price ₹ 10

ज्ञानियों का प्रेम ऐसा होता है जो कम-ज्यादा नहीं होता।
उन्हें पूरी दुनिया पर सच्चा प्रेम होता है। वह प्रेम तो परमात्मा है।

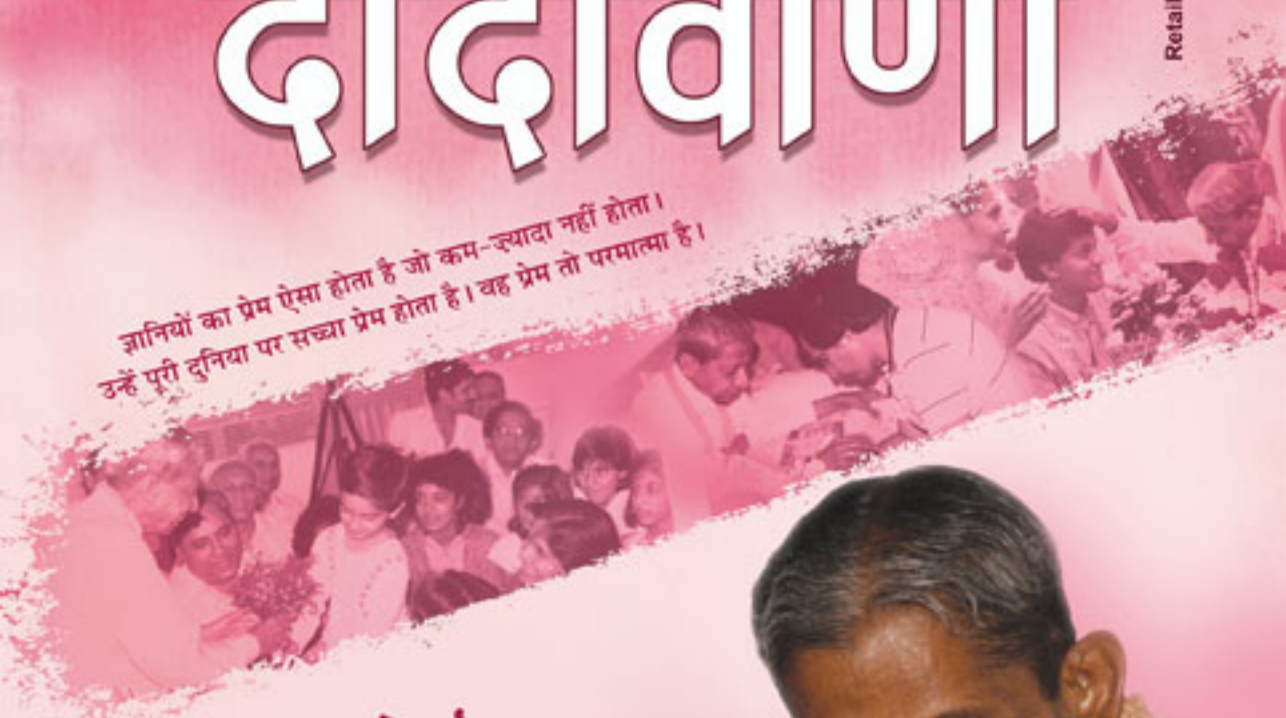

પ્રેમથી રહેશો...
પ્રોમિસ?

प्रेम से रहना....प्रॉमिस ?

(पूज्य नीरू माँ लिखित अंतिम संदेश)

वर्ष : 14 अंक : 5
अखंड क्रमांक : 161
मार्च 2019
Total 36 pages (including cover)

Editor : Dimple Mehta
© 2019
Dada Bhagwan Foundation.
All Rights Reserved
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
15 साल
भारत : 1500 रुपये
यू.एस.ए. : 150 डॉलर
यू.के. : 120 पाउन्ड
वार्षिक
भारत : 150 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 12 पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

प्रेम से रहना... प्रोमिस?

संपादकीय

जीवन व्यवहार में कई बार, बहुत सी जगह पर प्रेम शब्द का उपयोग होता है लेकिन साथ ही उसी व्यवहार या संबंधों में राग-द्वेष भी बहुत अधिक होते हैं। तब प्रश्न होता है कि क्या इसे प्रेम कहेंगे? जहाँ प्रेम हो, क्या वहाँ ऐसा हो सकता है? तो फिर वास्तव में प्रेम किसे कहेंगे?

प्रेम की यथार्थ परिभाषा समझाते हुए परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) कहते हैं कि जो बढ़े नहीं, घटे नहीं, वही सच्चा प्रेम है। जो चढ़ जाए और उतर जाए उसे प्रेम नहीं बल्कि आसक्ति कहते हैं। इस मोह को भी लोग प्रेम मानते हैं लेकिन उसमें बदले की आशा रहती है, जब वह नहीं मिलता तब भीतर जो उथल-पुथल होती है, उस पर से पता चलता है कि यह शुद्ध प्रेम नहीं था।

इस कलिकाल में ऐसा स्वार्थ रहित, आसक्ति रहित शुद्ध-व निर्मल प्रेम कहाँ देखने को मिलेगा? दादाश्री की प्रत्यक्ष उपस्थिति में ही महात्माओं को उस प्रेम की अनुभूति हुई है। जिसने एक बार भी उनकी अभेदता का स्वाद चख लिया, वे उनकी करुणा और प्रेम से वंचित नहीं रह सके।

सादी शैली में प्रेम का अर्थ है कि हमें किसी के नेगेटिव या किसी के दोष न दिखाई दें। जहाँ कोई स्वार्थ नहीं, अपेक्षा नहीं, आक्षेप नहीं, नियम नहीं, मतभेद नहीं, *नोंध* नहीं, सत्ता नहीं, भेद नहीं... संक्षेप में कहें तो अहंकार या ममता नहीं है।

प्रस्तुत अंक में दादाश्री व्यवहार में प्रेमस्वरूप बनने का तरीका सिखाते हैं। रोजमर्रा के जीवन व्यवहार में, घर में ही जहाँ *चिकणी* फाइलों के साथ राग-द्वेष-मोह व आसक्ति के बंधनों से घिरे रहते हैं, वे इस प्रेम शब्द को कैसे सीख पाएँगे? यहाँ पर दादाश्री ने बहुत ही सरल भाषा में, अपने ही घर में (पति, पत्नी, बच्चों, बड़ों व नौकरों के साथ) प्रैक्टिकली 'प्रेमस्वरूप' बनने की शुरुआत कहाँ से करें, उसके स्टेपिंग्स दिए हैं।

ज्ञानी पुरुष दादाश्री कहते हैं कि मैंने क्रोध, मान, माया व लोभ के हथियार नीचे रख दिए हैं, मैं उनका उपयोग नहीं करता, मैं संसार को प्रेम से जीतना चाहता हूँ। मेरे पास तो सिर्फ प्रेम का ही हथियार है और कुछ नहीं। इस संसार को सुधारने के लिए या इससे छूटने के लिए एक मात्र चाबी है वह 'प्रेम' ही है।

पूज्य नीरू माँ का सभी महात्माओं के लिए अंतिम संदेश यह था कि सब एक-दूसरे के साथ 'प्रेम से रहना' और इससे भी ज़्यादा उन्होंने महात्माओं से प्रोमिस माँगा है कि, 'रहोगे न? प्रोमिस?' तो हमें वह प्रोमिस को निभाना ही है। अब दादा की आज्ञा में रहकर जीवमात्र के साथ प्रेमस्वरूप बनने के निश्चय के साथ, समझ से पुरुषार्थ करेंगे, यही अभ्यर्थना।

- **जय सच्चिदानंद**

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें । ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

प्रेम से रहना... प्रोमिस?

प्रेम, शब्द अलौकिक भाषा का

प्रश्नकर्ता : वास्तव में प्रेम क्या चीज़ है? मुझे वह विस्तारपूर्वक समझना है।

दादाश्री : जगत् में यह जो प्रेम बोला जाता है न, वह प्रेम को नहीं समझने के कारण बोलते हैं। प्रेम की परिभाषा होगी या नहीं होगी? क्या डेफिनेशन है प्रेम की?

प्रश्नकर्ता : कोई अटैचमेन्ट कहता है, कोई वात्सल्य कहता है। बहुत तरह के प्रेम है।

दादाश्री : नहीं। असल में जिसे प्रेम कहा जाता है, उसकी परिभाषा तो होगी ही न?

प्रश्नकर्ता : मुझे आपसे किसी फल की आशा न हो तो क्या, उसे हम सच्चा प्रेम कह सकते हैं?

दादाश्री : वह प्रेम है ही नहीं। प्रेम संसार में हो ही नहीं सकता। वह अलौकिक तत्व है। संसार में जबसे अलौकिक भाषा समझने लगता है, तभी से उस प्रेम का उपादान होता है।

प्रश्नकर्ता : इस जगत् में प्रेम का जो तत्व समझाया गया है, वह क्या है?

दादाश्री : जगत् में जो प्रेम शब्द है न, वह अलौकिक भाषा का शब्द है, वह लोक व्यवहार में आ गया है। बाकी, लोग प्रेम को समझते ही नहीं हैं।

ढाई अक्षर प्रेम के.....

इसीलिए तो कबीर साहब ने कहा है,
'पोथी पढ़-पढ़ जग मूआ, पंडित भया न कोय,
ढाई अक्षर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।'

प्रेम के ढाई अक्षर, बस इतना ही समझ गए तो बहुत हो गया। बाकी, पुस्तकें पढ़ने वालों को तो कबीर साहब ने इतनी बड़ी-बड़ी सुनाई हैं, यें पुस्तकें पढ़-पढ़कर तो जगत् मर गया पर कोई पंडित नहीं हुआ। सिर्फ प्रेम के ढाई अक्षर समझने के लिए। परंतु ढाई अक्षर प्राप्त हुए नहीं और भटक मरे। अत: पुस्तक में यों देखते रहते हैं न, वह तो सब मेडनेस है। यदि ढाई अक्षर प्रेम का समझ गया तो वह पंडित हो गया, ऐसा कबीर साहब ने कहा है। कबीर साहब की बातें सुनी हैं सारी?

प्रेम हो तो कभी भी नहीं बिछड़ें। यह तो सारा मतलबी प्रेम है। मतलबी प्रेम क्या प्रेम कहलाएगा?

प्रश्नकर्ता : उसे आसक्ति कहा जाता है?

दादाश्री : है ही आसक्ति जबकि प्रेम तो अनासक्त योग है। अनासक्त योग से सच्चा प्रेम उत्पन्न होता है।

प्रेम की यथार्थ परिभाषा

प्रश्नकर्ता : दादा, वास्तव में प्रेम क्या है? मुझे पता नहीं है, वह समझाइए।

दादाश्री : वॉट इज़ द डेफिनेशन ऑफ लव?(प्रेम की परिभाषा क्या है? अरे, मैं ही बचपन में प्रेम की परिभाषा ढूँढ रहा था न! मुझे हुआ, प्रेम क्या होता होगा? लोग 'प्रेम-प्रेम' किया करते हैं, वह प्रेम क्या होगा? उसके बाद सभी पुस्तकें देखीं, सभी शास्त्र पढ़े लेकिन प्रेम की परिभाषा किसी भी जगह पर नहीं मिली। मुझे आश्चर्य हुआ कि किसी भी शास्त्र में ऐसी परिभाषा ही नहीं दी कि 'प्रेम क्या है!' फिर जब कबीर साहब की पुस्तक पढ़ी, तब दिल को तसल्ली हुई कि प्रेम की परिभाषा तो इन्होंने दी हैं। वह परिभाषा मुझे काम आई। वे क्या कहते हैं कि,

''घड़ी चढ़े, घड़ी उतरे, वह तो प्रेम न होय,
अघट प्रेम ही हृदय बसे, प्रेम कहिए सोय!''

उन्होंने परिभाषा दी। मुझे तो बहुत सुंदर लगी थी परिभाषा, 'कहना पड़ेगा कबीर साहब, धन्य हैं!' यह सब से सच्चा प्रेम! घड़ी में चढ़े और घड़ी में उतरे, क्या वह प्रेम कहलाएगा?

प्रश्नकर्ता : तो सच्चा प्रेम किसे कहा जाता है?

दादाश्री : सच्चा प्रेम जो बढ़े नहीं, घटे नहीं! हम ज्ञानियों का प्रेम ऐसा होता है, जो कम-ज़्यादा नहीं होता। ऐसा हमारा सच्चा प्रेम पूरे वर्ल्ड पर होता है और वह प्रेम तो परमात्मा है।

प्रश्नकर्ता : फिर भी जगत् में कहीं तो प्रेम होगा न?

दादाश्री : किसी भी जगह पर प्रेम है ही नहीं। इस जगत् में प्रेम जैसी चीज़ है ही नहीं। सब आसक्ति ही है। उल्टा बोलते ही तुरंत पता चल जाता है। अभी आज कोई विलायत से आए तो आज तो उनके साथ ही बैठे रहना अच्छा लगता है। उसके साथ ही खाना, घूमना अच्छा लगता है। दूसरे दिन अगर वह हमसे कहें, 'नॉनसेन्स (नालायक) जैसे हो गए हो।' तो हो गया! जबकि 'ज्ञानी पुरुष' को तो सात बार 'नॉनसेन्स' कहें तब भी कहेंगे, 'हाँ भाई, बैठ, तू बैठ' क्योंकि 'ज्ञानी' खुद जानते हैं कि यह नहीं बोल रहा, इसकी रिकॉर्डर बोल रही है।

यह सच्चा प्रेम तो कैसा है कि जिसमें द्वेष होता ही नहीं है। जहाँ पर प्रेम के पीछे द्वेष है, उस प्रेम को प्रेम कहा ही कैसे जाए? एक समान प्रेम होना चाहिए।

जगत् ने प्रेम देखा ही नहीं है

प्रश्नकर्ता : यानी क्या सच्चा प्रेम कम-ज़्यादा नहीं होता?

दादाश्री : सच्चा प्रेम कम-ज़्यादा नहीं हो, वैसा ही होता है। यह तो प्रेम हुआ हो और कभी गालियाँ दें तो उसके साथ झगड़ा हो जाता है और फूल चढ़ाएँ तो वापस हमसे चिपक जाता है।

प्रश्नकर्ता : व्यवहार में घटता-बढ़ता है, उसी प्रकार से होता है।

दादाश्री : लोगों का प्रेम तो पूरे दिन कम-ज़्यादा ही होता रहता है न! देखो न, बेटे-बेटियों सभी पर कम-ज़्यादा होता ही रहता है न! रिश्तेदार वगैरह, सभी जगह कम-ज़्यादा ही होता रहता है न! अरे, खुद अपने पर भी बढ़ता-घटता ही रहता है न! एक क्षण शीशे में देखे तो कहता है, 'अब मैं अच्छा दिखाई देता हूँ।' क्षण भर बाद 'नहीं, ठीक नहीं है' कहेगा। यानी खुद पर भी प्रेम कम-ज़्यादा होता रहता है। इसकी ज़िम्मेदारी नहीं समझने की वजह से ही यह सब होता है न! कितनी बड़ी ज़िम्मेदारी!

प्रश्नकर्ता : तभी लोग कहते हैं न कि प्रेम सीखो, प्रेम सीखो!

दादाश्री : लेकिन यह प्रेम है ही नहीं न! ये तो लौकिक बातें हैं। इसे प्रेम कौन कहेगा? लोगों का प्रेम जो घटता-बढ़ता है वह सब आसक्ति है। निरी आसक्ति है! जगत् में आसक्ति ही है। जगत् ने प्रेम देखा ही नहीं है।

जहाँ स्वार्थ न हो, वहाँ है प्रेम

प्रश्नकर्ता : जो प्रेम कम-ज़्यादा नहीं होता, उसका स्वरूप कैसा होता है?

दादाश्री : कम-ज़्यादा नहीं होता, बढ़ता नहीं और घटता नहीं।

प्रश्नकर्ता : किस तरह से प्रेम कम-ज़्यादा नहीं होता?

दादाश्री : जब देखो तब हमें वैसे का वैसा ही प्रेम दिखाई देता है। जहाँ स्वार्थ नहीं होता वहाँ पर शुद्ध प्रेम होता है। स्वार्थ कब नहीं होता? जब मेरा-तेरा नहीं होता तब। मेरा-तेरा कब नहीं होता? जब कोई देहधारी के रूप में नहीं रहता या फिर यदि ज्ञान हो तब मेरा-तेरा नहीं रहता। ज्ञान के बिना तो मेरा-तेरा रहता ही है न! माँ को बेटे पर अत्यंत प्रेम रहता है। बाकी सब प्रकार के प्रेम की बजाय यह प्रेम प्रशंसनीय है। इसमें बलिदान है। क्या है? इस प्रेम में कुछ अंश तक माँ का बलिदान है, मदर का। लेकिन वह भी जब मदर की पसंद की चीज़ को यदि बेटा छीनने जाए तो दोनों झगड़ते हैं, तब प्रेम फ्रेक्चर हो जाता है। बेटा अलग रहने चला जाता है। कहता है 'माँ, मुझे तेरे साथ नहीं जमेगा।' फिर इसे प्रेम कहा ही नहीं जा सकता न! जो कभी भी न टूटे उसे प्रेम कहते हैं! तोड़ने से भी टूटे नहीं और फिर कम-ज़्यादा भी नहीं हो।

प्रश्नकर्ता : जिसमें उतार-चढ़ाव नहीं होता।

दादाश्री : जो कम-ज़्यादा हो, उसे प्रेम कैसे कहेंगे? घड़ी भर में चढ़ जाए, उतर जाए। यदि प्रेम उतर जाए तो वह द्वेष में परिणामित होता है और चढ़ जाए तो राग में परिणामित होता है।

बाकी, यह तो लौकिक प्रेम है। यों ही लोग 'प्रेम-प्रेम' गाया करते हैं। पत्नी के साथ भी क्या प्रेम रहता होगा? ये सभी स्वार्थ के सगे हैं और यह जो माँ है न, वह तो मोह से ही जीवित रहती है। खुद के पेट से जन्मा है इसलिए उसे मोह उत्पन्न होता है। गाय को भी मोह उत्पन्न होता है लेकिन उसका मोह छह महीनों तक रहता है और इस मदर को तो बेटा साठ साल का हो जाए तब भी मोह नहीं जाता।

मोह और प्रेम के बीच की भेद रेखा

प्रश्नकर्ता : मोह और प्रेम, इन दोनों के बीच की भेद रेखा क्या है?

दादाश्री : यह जो पतंगा होता है न, वह पतंगा दीये के पीछे पड़कर याहोम हो जाता है न! वह जो खुद की ज़िंदगी खत्म कर देता है, वह मोह कहलाता है। जबकि प्रेम टिकता है। प्रेम टिकाऊ होता है, वह मोह नहीं होता।

मोह अर्थात् 'यूज़लेस' जीवन! वह तो अंधे होने के बराबर है। अंधा व्यक्ति कीड़े की तरह घूमता है और मार खाता है उसके जैसा जबकि प्रेम तो टिकाऊ होता है। उसमें तो पूरी ज़िंदगी के सुख की ज़रूरत रहती है। वह ऐसा नहीं है न कि तात्कालिक सुख ढूँढे!

यानी यह सब मोह ही है न! मोह अर्थात् खुले आम दगा। मोह अर्थात् जो -जो हंड्रेड परसेन्ट दगा निकला है।

प्रश्नकर्ता : यह मोह है और यह प्रेम है, सामान्य व्यक्ति को ऐसा किस तरह पता चलेगा? किसी को सच्चा प्रेम है या यह उसका मोह है, ऐसा खुद को कैसे पता चलेगा?

दादाश्री : वह तो जब उसे झिड़का जाए, तब अपने आप पता चल जाएगा। एक दिन झिड़कने पर वह चिढ़ जाए, तब समझ जाएँगे न कि यह यूज़लेस है! फिर क्या दशा होगी? इससे तो शुरुआत में ही जाँच कर लें। रुपया खनका कर देखना चाहिए कि कलदार है या खोटा है, उससे तुरंत पता चल जाता है न? कोई बहाना निकालकर खड़काना। अभी तो निरे भयंकर स्वार्थ! स्वार्थ के लिए भी कोई प्रेम दिखाता है। पर एक दिन खड़का कर देखेंगे तो पता चलेगा कि यह सच्चा प्रेम है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : जहाँ सच्चा प्रेम हो वहाँ कैसा रहता है, खड़काने पर भी?

दादाश्री : खड़काने पर भी वह शांत रहकर ऐसा करता है कि सामने वाले को नुकसान न हो। जहाँ सच्चा प्रेम हो, वहाँ गले उतार लेता है। अब, अगर वह बिल्कुल बदमाश हो न, तब भी गले उतार लेता है।

प्रेम के प्रकार

प्रश्नकर्ता : इस प्रेम के प्रकार कितने हैं, कैसे हैं, वह सब समझाइए न!

दादाश्री : दो ही प्रकार के प्रेम हैं। एक घटने-बढ़ने वाला। घटे तब आसक्ति कहलाता है और बढ़े तब आसक्ति कहलाता है और एक वह जो घटता-बढ़ता नहीं है वैसा अनासक्त प्रेम, ज्ञानियों को होता है।

ज्ञानी का प्रेम तो शुद्ध प्रेम है। ऐसा प्रेम कहीं भी देखने को नहीं मिले। दुनिया में जहाँ भी आप देखते हो, वह सारा ही प्रेम मतलबी है। पत्नी-पति का, माँ-बाप का, बाप-बेटे का, माँ-बेटे का, सेठ-नौकर का, हर एक का प्रेम मतलबी होता है। मतलबी है, ऐसा कब समझ में आता है कि जब वह प्रेम फ्रेक्चर हो जाए। जब तक मिठास बरतती है तब तक कुछ नहीं लगता लेकिन कड़वाहट होने पर पता चलता है। अरे, पूरी ज़िंदगी संपूर्ण रूप से बाप के कहे में रहा हो और एक ही बार गुस्से में, संयोगवश यदि बेटा बाप को 'आप बेअक्ल हो' ऐसा कह दे तो पूरी ज़िंदगी के लिए संबंध टूट जाता है। बाप कहे, 'तू मेरा बेटा नहीं और मैं तेरा बाप नहीं।' यदि सच्चा प्रेम हो तब तो वह हमेशा के लिए वैसे का वैसा ही रहेगा, फिर चाहे गालियाँ दे या झगड़ा करे। उसके सिवा के प्रेम को तो सच्चा प्रेम कैसे कहा जाए? मतलबी प्रेम, उसी को आसक्ति कहा जाता है। वह तो व्यापारी और ग्राहक जैसा प्रेम है, सौदेबाज़ी है। जगत् का प्रेम तो आसक्ति कहलाता है। प्रेम तो उसे कहते हैं कि साथ ही साथ रहना अच्छा लगे। उसकी सभी बातें अच्छी लगें। उसमें एक्शन और रिएक्शन नहीं होते। प्रेम प्रवाह तो एक सरीखा ही बहा करता है। घटता-बढ़ता नहीं है, *पूरण-गलन* (चार्ज होना, डिस्चार्ज होना) नहीं होता। आसक्ति *पूरण-गलन* स्वभाव वाली होती है।

आसक्ति और प्रेम में भेद

प्रश्नकर्ता : इसमें ज़रा प्रेम और आसक्ति के बीच भेद समझाइए न!

दादाश्री : जो विकृत प्रेम है उसी को आसक्ति कहते हैं। यह जगत् यानी विकृत(विभाविक) है। उसमें जिसे हम प्रेम कहते हैं, वह विकृत प्रेम कहलाता है, और उसे आसक्ति ही कहा जाता है।

जो प्रेम उत्पन्न होता है, वह प्रेम भी ऐसा होना चाहिए कि घटे-बढ़े नहीं। वही का वही प्रेम यदि कम-ज़्यादा हो तो आसक्ति हो गई। जैसे कि स्वास्थ्य होता है तो वही का वही स्वास्थ्य यदि कम-ज़्यादा हो तो रोग कहलाता है! उसी प्रकार से वही का वही प्रेम कम-ज़्यादा हो, वह आसक्ति कहलाता है। हमारा प्रेम बढ़ता-घटता नहीं है। आपका बढ़ता-घटता है इसलिए वह आसक्ति कहलाता है। कदाचित ऋणानुबंधी के सामने प्रेम कम-ज़्यादा हो जाए तो 'हमें' उसे 'जानना' है। अब प्रेम कम-ज़्यादा नहीं होना चाहिए। वर्ना यदि प्रेम एकदम बढ़ जाए तब भी आसक्ति कहलाता है और कम हो जाए तब भी आसक्ति कहलाता है।

आसक्ति, परमाणुओं के आकर्षण से

यह किसके जैसा है? यह जो चुंबक होता है और यह आलपिन यहाँ पड़ी हो और चुंबक को ऐसे-ऐसे करें तो आलपिन ऊँची-नीची होती है या नहीं होती? होती है। चुंबक पास में रखें तो आलपिन उससे चिपक जाती है। उस आलपिन में आसक्ति कहाँ से आई? उसी प्रकार इस शरीर में चुंबक नामक गुण है क्योंकि अंदर इलेक्ट्रिकल बॉडी है इसलिए उस बॉडी के आधार पर सारी इलेक्ट्रिसिटी है। उससे शरीर में चुंबक नामक गुण उत्पन्न होता है, तब जहाँ खुद के परमाणुओं से मिलते जुलते परमाणु आएँ, वहाँ आकर्षण होता है और दूसरों के साथ कुछ भी नहीं। उस आकर्षण को लोग राग-द्वेष कहते हैं। कहते हैं, 'मेरी देह खिंच रही है।' अरे, तेरी इच्छा नहीं तो देह क्यों खिंच रही है? 'तू' कौन है वहाँ पर?

हम देह से कहें, 'तू जाना मत', तब भी उठकर चलने लगती है क्योंकि परमाणु से बनी हुई है न, परमाणुओं का आकर्षण है यह। जहाँ मेल खाते परमाणु आएँ, यह देह वहाँ पर खिंच जाती है। नहीं तो अपनी इच्छा न हो, तब भी यह देह कैसे खिंच जाए? यह जो देह खिंच जाती है, उसे इस जगत् के लोग कहते हैं, 'मुझे इस पर बहुत राग है।' हम पूछें, 'अरे, तेरी इच्छा खिंचने की है?' तो वे कहेंगे, 'नहीं, मेरी इच्छा नहीं है, तब भी खिंच जाती है।' तो फिर यह राग नहीं है। यह तो आकर्षण का गुण है पर ज्ञान न हो तब तक आकर्षण नहीं कहलाता क्योंकि अपने मन में तो वह ऐसा ही मानता है कि 'मैंने ही यह किया।' और यह 'ज्ञान' हो तो खुद सिर्फ जानता है कि देह आकर्षण खिंच रही है और मैंने कुछ नहीं किया है। अत: यह जो देह खिंचती है न, वह देह क्रियाशील बनती है। यह सब परमाणुओं का ही आकर्षण है।

ये मन-वचन-काया आसक्त स्वभाव वाले हैं। आत्मा आसक्त स्वभाव वाला नहीं है। और यह देह आसक्त होती है, वह चुंबक और आलपिन जैसा है। चाहे कैसा चुंबक हो तब भी वह तांबे को नहीं खींचेगा। किसे खींचेगा वह? हाँ, सिर्फ लोहे को ही खींचेगा। पीतल को नहीं खींचेगा। यानी स्व-जातीय को ही खींचेगा। वैसे ही इसमें जो परमाणु हैं न अपनी बॉडी में, वे चुंबक वाले हैं। वे स्व-जातीय को ही खींचते हैं। समान स्वभाव वाले परमाणु खिंचते हैं। पागल पत्नी के साथ बनती है और समझदार बहन उसे बुलाए तब भी उसके साथ नहीं बनता क्योंकि परमाणु नहीं मिलते हैं।

अत: बेटे पर आसक्ति ही है सिर्फ। परमाणु-परमाणु मेल खाते हैं। तीन परमाणु आपके और तीन परमाणु उसके, ऐसे परमाणु मेल खाएँ तब आसक्ति होती है। मेरे तीन और आपके चार हों तो कोई लेना देना नहीं। यानी विज्ञान है यह सारा तो!

यह जो आसक्ति है, वह देह का गुण है, परमाणुओं का गुण है। वह कैसा है? चुंबक और आलपिन में जैसा संबंध है वैसा, देह से मेल खाए, वैसे परमाणुओं में ही देह खिंचती है, वह आसक्ति है।

आसक्ति तो अबव नॉर्मल और बिलो नॉर्मल भी हो सकती है। प्रेम नॉर्मेलिटी में रहता है, एक सरीखा ही रहता है, उसमें किसी भी प्रकार का बदलाव ही नहीं होता। आसक्ति तो जड़ की है, चेतन में तो नाममात्र को भी आसक्ति नहीं है।

व्यवहार में अभेदता रहती है तो उसका भी कारण है। वे तो परमाणु और आसक्ति के गुण हैं, पर उसमें कौन से क्षण क्या होगा, वह कहा नहीं जा सकता। जब तक परमाणु मेल खाते हैं तब तक आकर्षण रहता है, उसके कारण अभेदता रहती है। और जब परमाणु मेल न खाएँ तब विकर्षण होता है और बैर हो जाता है इसलिए जहाँ आसक्ति हो, वहाँ बैर होता ही है। आसक्ति में हिताहित का भान नहीं रहता। प्रेम में संपूर्ण हिताहित का भान रहता है।

यह तो परमाणुओं का साइन्स है। उसमें आत्मा को कुछ भी लेना देना नहीं है। लोग तो भ्रांति से परमाणु के खिंचाव को ऐसा मानते हैं कि, 'मैं खिंचा।' आत्मा खिंचता ही नहीं।

कहाँ भ्रांत मान्यता! और कहाँ वास्तविकता!

यह तो सूई और चुंबक के आकर्षण के कारण आपको ऐसा लगता है कि मुझे प्रेम है इसीलिए मैं खिंचता हूँ लेकिन प्रेम जैसी चीज़ है ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : तो लोगों को ऐसा पता नहीं चलता कि अपना प्रेम है या नहीं?

दादाश्री : प्रेम का तो सब को पता चलता है। डेढ़ साल के बच्चे को भी पता चलता है कि यह प्रेम है। यह बाकी सब तो आसक्ति है। चाहे कैसे भी संयोग हों पर जो प्रेम बढ़े नहीं और घटे नहीं, वह प्रेम कहलाता है। बाकी, इसे प्रेम कहा ही कैसे जाए? यह तो भ्रांति वाला है। भ्रांत भाषा का शब्द है।

आसक्ति कहाँ होती है? जहाँ उससे कोई बदले की आशा होती है। और जहाँ आसक्ति हो, वहाँ आक्षेप लगे बगैर रहते ही नहीं। वह आसक्ति का स्वभाव है। आसक्ति हो तब आक्षेप लगा ही करते हैं न कि, 'आप ऐसे हो और आप वैसे हो।' 'आप ऐसे और तू ऐसी' ऐसा नहीं कहते, नहीं? आपके वहाँ नहीं कहते या कहते हैं? कहते हैं! वह आसक्ति के कारण है।

संसार में झगड़ों के कारण ही आसक्ति होती है। इस संसार में झगड़ा तो आसक्ति का विटामिन है। झगड़ा नहीं हो तब तो वीतराग हो सकेंगे।

जगत् ने सब देखा था पर प्रेम नहीं देखा था और जगत् जिसे प्रेम कहता है वह तो आसक्ति है। आसक्ति से ये सारे बखेड़े खड़े होते हैं।

आसक्ति में हमेशा राग-द्वेष हुआ करते हैं। यह जो आसक्ति है उसी को प्रेम मानते हैं, वह लोकभाषा है न! दूसरे भी फिर ऐसा ही कहते हैं, उसी को प्रेम कहते हैं। पूरी लोकभाषा ही ऐसी हो गई है!

राग, द्वेष व प्रेम

प्रश्नकर्ता : तो अब प्रेम और राग ये दोनों शब्द समझाइए।

दादाश्री : राग, वह पौद्गलिक चीज़ है और प्रेम, वह सच्ची चीज़ है। अब प्रेम कैसा होना चाहिए? जो बढ़े नहीं, घटे नहीं, वह प्रेम

कहलाता है। जो बढ़े-घटे, वह राग कहलाता है। अत: राग और प्रेम में फर्क ऐसा है कि वह एकदम बढ़ जाए तो उसे राग कहते हैं तो फँसा फिर। यदि प्रेम बढ़ जाए तो राग में परिणामित होता है। प्रेम उतर जाए तो द्वेष में परिणामित होता है इसलिए वह प्रेम कहलाता ही नहीं न! वह तो आकर्षण और विकर्षण है। अत: लोग जिसे प्रेम कहते हैं, भगवान उसे आकर्षण कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : प्रेम या मोह द्वेष जितना ही जोखिम वाला है? दोनों में से कौन सा ज़्यादा जोखिम वाला है?

दादाश्री : संसारी प्रेम की तुलना में द्वेष ज़्यादा जोखिम वाला है। प्रेम का जोखिम कम है क्योंकि प्रेम का जन्म द्वेष में से होता है। यह द्वेष बीज है। प्रेम का बीज ही द्वेष है, प्रेम का बीज प्रेम नहीं है। आपको समझ में आ रहा है क्या?

आपको घर में सब से प्रेम होता है लेकिन फिर यदि आपको द्वेष नहीं हो तो समझना कि फिर से बीज नहीं डलेगा लेकिन यदि द्वेष हो तो फिर से बीज डलते रहेंगे।

लोग समझते हैं कि प्रेम से यह जगत् टिका हुआ है लेकिन यह जगत् प्रेम से नहीं टिका है, बैर से टिका हुआ है। प्रेम की फाउन्डेशन है ही नहीं। यह बैर के फाउन्डेशन पर टिका हुआ है, फाउन्डेशन ही बैर के हैं इसलिए बैर छोड़ो। अत: हम बैर का *निकाल* (निपटारा)करने को कहते हैं न! समभावे *निकाल* करने का कारण यही है।

प्रेम से वश होगा यह जगत्

यदि आप किसी को झिड़ककर जीत गए तो उसे जीतना नहीं कहेंगे जबकि नम्रता से सब हल आ जाएगा। समभाव से *निकाल* करना अर्थात् क्या? हल लाना। झुककर या किसी भी तरह से लेकिन हल लाना है। वह भी अपनी कुशलता के अनुसार झुकना लेकिन झुककर भी हल लाना है, समभाव से *निकाल* करना है। कैसे हल आएगा?

प्रश्नकर्ता : नम्रता से।

दादाश्री : हाँ। भगवान कितने समझदार थे, महावीर भगवान! पहले बड़े-बड़े चक्रवर्ती, तीर्थंकर हो चुके हैं, चक्रवर्ती राजा होने के बावजूद भी, यदि छोटा बच्चा झिड़के तब भी उससे खुश होकर बात करते हैं क्योंकि खुद को मुक्ति पानी है, मोक्ष में जाना है। क्या फिर से उसके साथ बैठे रहना है? खुद का काम तो *लक्ष* (जागृति) में रहना चाहिए या नहीं? खुद का ध्येय *लक्ष* में रहना चाहिए न? अत: हल लाना चाहिए। वर्ना, अभी यह जो दबा हुआ दिखाई देता है न, वह दबता नहीं है लेकिन वह भीतर जमा करके रखता है। किसी को दबाकर आप खुश नहीं रह पाओगे। उसे मुक्त भाव से रखना। उसके साथ प्रेम भाव रखना। यह जगत् प्रेम से वश होगा और वह प्रेम आसक्ति वाला नहीं होना चाहिए। प्रेम ऐसा नहीं होना चाहिए कि जो कम-ज़्यादा हो, अखंड! आज अच्छे विचारों वाला हो तब भी प्रेम और परसों शराब पीकर आए तब भी प्रेम क्योंकि, बेचारे को उसके उदय कर्म फँसाते हैं, उसमें हम क्यों उससे प्रेम छोड़ दें? और प्रेम के अलावा अन्य कुछ करोगे तो आप फँसोगे। किसी के कर्म के उदय में दखल नहीं देना चाहिए।

प्रेम से पालना-पोसना पौधे को

प्रश्नकर्ता : व्यवहार में कोई गलत कर रहा हो तो उसे टोकना पड़ता है तो उससे उसे दु:ख होता है। तो उसका कैसे *निकाल* करें?

दादाश्री : टोकने में हर्ज नहीं है लेकिन हमें आना चाहिए न! कहना आना चाहिए न!

प्रश्नकर्ता : किस तरह से कहना चाहिए?

दादाश्री : बच्चे से कहें, 'तुझमें अक्ल नहीं है, गधा है।' ऐसा बोलेंगे तो फिर क्या होगा वहाँ। उसे भी अहंकार होता है या नहीं? आपको ही अगर आपका बॉस कहे कि 'आपमें अक्ल नहीं है, गधे हो।' ऐसा कहे तो क्या होगा? नहीं कहना चाहिए ऐसा। टोकना आना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : किस तरह टोकना चाहिए?

दादाश्री : उसे बैठाओ। फिर कहो, हम हिन्दुस्तानी हैं, आर्य प्रजा है अपनी, हम कोई अनाड़ी नहीं है और हमें ऐसा नहीं होना चाहिए। इस तरह सब समझाएँ और प्रेम से कहें तब रास्ते पर आ जाएगा। नहीं तो आप तो झगड़ा करके, लेफ्ट एन्ड राइट, लेफ्ट एन्ड राइट ले लो तो चलता होगा?

हमें उससे ऐसा पूछना चाहिए कि, 'आप जो यह सब करते हो, वह आपको उचित लगता है? आपने यह सब सोच समझकर किया है?' तब यदि वह कहे कि 'मुझे ठीक नहीं लगता।' तब हम कहेंगे कि 'भाई, तो क्यों व्यर्थ में ऐसा करना? इस तरह खुद ज़रा सोच समझकर बोलो न!' सभी खुद ही न्यायाधीश हैं, सभी समझते हैं। यदि गलती हो जाए न तो वह खुद उसे समझ तो जाता ही है लेकिन अगर आप ऐसा कहो कि, 'तू मूर्ख और गधा है। तूने ऐसा क्यों किया?', तब बल्कि वह अपनी बात पर अड़ा रहेगा। कहेगा ''नहीं, 'मैं जो करता हूँ' वही ठीक है, जाओ।'' फिर उल्टा करेगा।

प्रेम से किए बिना परिणाम नहीं आता। एक पौधा भी पाल-पोसकर बड़ा करना हो, तब भी प्रेम से करते हो, तब वह बहुत अच्छे से बढ़ता है लेकिन अगर यों ही पानी डालो और चीखो-चिल्लाओ तो कुछ नहीं होगा, एक पौधा बड़ा करना हो तो! आप कहते हो कि, 'ओहोहो! बहुत अच्छा हुआ पौधा!' तो उसे अच्छा लगता है! वह भी अच्छे बड़े-बड़े फूल देता है!! तो फिर इन मनुष्यों पर तो कितना असर होता होगा?!

कमज़ोर व्यक्ति सामने वाले को क्या सुधारेगा?

जहाँ प्रेम हो वहाँ का वातावरण सुंदर होता है! बच्चे वहाँ से तीन-तीन घंटे तक हटते नहीं हैं। बाहर कोई गोलियाँ(पीपरमेन्ट) दे रहा हो, तब भी गोलियाँ खाने नहीं जाते और यहीं पर बैठे रहते हैं। क्यों? क्योंकि वातावरण सुंदर है, प्रेममय है, सब को अच्छा लगे, ऐसा है। लेकिन इस काल के लोगों को इस बात का भान ही नहीं है न!

ऐसा कर दो कि आज के बच्चों को बाहर जाना अच्छा नहीं लगे घर में अपना प्रेम, प्रेम और प्रेम ही दिखाई दे। फिर अपने संस्कार चलेंगे।

हमें यदि सुधारना हो तो सब्ज़ी *सुधारना* (साफ करनी, काटनी) पर बच्चों को नहीं सुधारना है! इन लोगों को सब्ज़ी *सुधारनी* आती है। सब्ज़ी *सुधारनी* नहीं आती?

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, मुझे क्या करना चाहिए?

दादाश्री : यदि अपना बोला हुआ नहीं फलता तो हमें चुप हो जाना चाहिए। हम मूर्ख हैं, हमें बोलना नहीं आता इसलिए बंद कर देना चाहिए। अपना बोला हुआ फलता नहीं और उल्टा अपना मन बिगड़ता है, अपना जन्म बिगड़ता है। ऐसा कौन करे फिर?

अत: यह काल ऐसा नहीं है कि किसी को सुधारा जा सके। खुद ही बिगड़ा हुआ है तो फिर सामने वाले को क्या सुधारेगा? अगर खुद ही 'वीकनेस' का पुतला है तो फिर, वह सामने वाले

को क्या सुधारेगा?! उसके लिए तो बलवानपन चाहिए इसलिए प्रेम की ही ज़रूरत है।

प्रश्नकर्ता : सुधरे हुए की परिभाषा क्या है?

दादाश्री : सामने वाले व्यक्ति को आप डाँट रहे हों तब भी उसे उसमें प्रेम दिखाई दे। आप उलाहना दो, तब भी उसे आपमें प्रेम ही दिखाई दे कि, 'अहोहो! मेरे फादर का मुझ पर कितना प्रेम है!' उलाहना दो लेकिन अगर प्रेम से दोगे तो सुधरेंगे।

भीतर से प्रयत्न करना, सूक्ष्म रूप से

प्रश्नकर्ता : आज आपने जो सुधारने का उपाय बताया तो यदि उस उपाय को अपनाएँ तो वह जल्दी सुधरेगा या फिर उसका समय आने पर ही सुधरेगा?

दादाश्री : जल्दी सुधरेगा, हमारे प्रयत्न रहने चाहिए लेकिन हमारे ऐसे प्रयत्न जो रिएक्शनरी हों, उनमें नहीं पड़ना चाहिए। हम उसे झिड़कें और उसे खराब लगे तो उस प्रयत्न को प्रयत्न नहीं कहेंगे। वे हमें भीतर से करने चाहिए, सूक्ष्म रूप से। यदि हमें खुद को स्थूल रूप से नहीं आता तो हमें सूक्ष्म रूप से करना चाहिए। वर्ना, बहुत नहीं डाँटना लेकिन थोड़ा सा कह देना कि, 'भाई हमें यह शोभा नहीं देता।' यों एक शब्द बोलकर फिर बंद रखना, शब्द को कंट्रोल में रखना। कहना तो पड़ेगा ही लेकिन कहने का तरीका होना चाहिए। यानी उसके प्रति अपना प्रेम होना चाहिए। आप डाँटो लेकिन यदि प्रेम से डाँटोगे न, तो सुधरेगा।

जगत् को सुधारने का रास्ता है 'प्रेम'

यह सब सुधारना हो न, तो प्रेम से सुधरेगा। इन सब को जो मैं सुधारता हूँ न, वह प्रेम से सुधारता हूँ। यह हम प्रेम से ही कहते हैं न! प्रेम से कहते हैं इसलिए बात बिगड़ती नहीं और ज़रा सा द्वेष से कहते ही वह बात बिगड़ जाती है। दूध में दही डला न हो और ज़रा हवा लग जाए, तब भी उस दूध का दही बन जाता है।

अत: प्रेम से सब कह सकते हैं। प्रेम वाला इंसान सबकुछ कह सकता है। यानी हम क्या कहना चाहते हैं? प्रेमस्वरूप हो जाओ तो यह जगत् आपका ही है। जहाँ बैर हो, वहाँ बैर में से धीरे-धीरे प्रेमस्वरूप कर डालो। बैर से यह जगत् इतना अधिक रफ (नहीं पसंद हो ऐसा) दिखाई देता है। देखो न यहाँ प्रेमस्वरूप हैं। किसी को ज़रा भी बुरा लगता नहीं और कैसा आनंद करते हैं सभी!

अगर इस संसार के पाँच लोगों को सुधारना है तो आप प्यार से सुधार सकते हो। बाकी, कोई भी नहीं सुधर सका है, एक भी व्यक्ति नहीं सुधरा है। जब खुद ही नहीं सुधरा तब दूसरों को क्या सुधारेगा? और प्रेममूर्ति बने बगैर कभी कुछ नहीं सुधर सकताा।

प्रेम में अपेक्षा नहीं होती

प्रश्नकर्ता : आप जिस प्रेम की बात करते हैं, क्या उस प्रेम में अपेक्षाएँ होती हैं?

दादाश्री : अपेक्षा? प्रेम में अपेक्षा नहीं होती। दारू पीए उस पर भी प्रेम और दारू नहीं पीता उस पर भी प्रेम रहता है। प्रेम सापेक्ष नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : प्रेम में सामने वाले का वर्तन कैसा होता है?

दादाश्री : वह तो जब अपनी तरफ से उसे किसी भी तरह का सुख नहीं मिले बल्कि दु:ख ही मिलता रहे फिर भी वह प्रेम से अच्छी तरह से संभाले तब हमें समझना है कि, 'वाह! कहना पड़ेगा!' हमसे उसे दु:ख ही मिलता है, सुख तो मिलता ही नहीं है लेकिन यदि हमसे वह सुख

की अपेक्षा रखे और वह अपेक्षा तो पूरी नहीं हो बल्कि उसे दु:ख मिले फिर भी वह प्रेम रखे।

प्रेम में नहीं देखता कोई दोष

प्रश्नकर्ता : बढ़े नहीं और घटे नहीं उसके अलावा प्रेम के बारे में कुछ और बताइए न, दादा।

दादाश्री : प्रेम में दोष दिखाई ही नहीं देते। जबकि लोगों को तो कितने दोष दिखाई देते हैं? 'तुम ऐसी और तुम वैसी' अरे, प्रेम कह रहा था न! कहाँ गया प्रेम? यानी प्रेम नहीं है।

ये लड़कियाँ जब लड़का पसंद करती हैं, तब यों देखकर पास करती हैं, फिर क्या झगड़ती नहीं होंगी? झगड़ती हैं क्या? तो इसे प्रेम कहेंगे ही नहीं न! प्रेम तो हमेशा के लिए होना चाहिए। जब देखो वही प्रेम। वैसा ही दिखाई दे, उसे प्रेम कहते हैं और वहाँ से आश्वासन लिया जा सकता है। यह तो अगर कभी हमें उस पर प्रेम आ रहा हो और वह रुठकर बैठ जाए.. तो रख तेरा प्रेम! डाल गटर में यहाँ से। मुँह फुलाकर घूमे वैसे प्रेम का क्या करना है? आपको क्या लगता है?

प्रश्नकर्ता : ठीक है।

दादाश्री : प्रेम ऐसा होना चाहिए कि कभी भी मुँह न बिगाड़े। वैसा प्रेम हमारे पास मिलेगा। ऐसा प्रेम होना चाहिए कि यदि पति डाँटे तब भी प्रेम कम-ज़्यादा न हो, हीरे के टॉप्स ले आए तब प्रेम बढ़ जाता है, वह भी आसक्ति है। अत: यह संसार आसक्ति से चल रहा है।

जहाँ प्रेम है वहाँ नोंध नहीं

प्रश्नकर्ता : पति-पत्नी के बीच भी ऐसा ही होता है न? 'मैं तुझे चाहता हूँ, मैं तुझसे प्रेम करता हूँ' कहते हैं लेकिन फिर वापस झगड़ते हैं।

दादाश्री : इसी को आसक्ति कहते हैं। ठौर नहीं और ठिकाना नहीं! बड़े आए चाहने वाले! वास्तव में चाहने वाला तो मरते दम तक हाथ नहीं छोड़ता। बाकी, होता सबकुछ है लेकिन उसकी *नोंध* (नोट करना) नहीं लेता। जहाँ प्रेम है, वहाँ *नोंध* होती ही नहीं। *नोंध* बही रखो और प्रेम रखो, दोनों साथ में नहीं हो सकते। अगर *नोंध* बही रखें कि 'ऐसा किया और वैसा किया' तो वहाँ पर प्रेम नहीं रहता।

हमारे साथ ये इतने लोग हैं लेकिन किसी की *नोंध* नहीं। किसी से चाहे कुछ भी हो जाए फिर भी *नोंध* नहीं। बाहर भी *नोंध* नहीं और अंदर भी *नोंध* नहीं। वर्ना हमें 'टेन्शन' नहीं रहता होगा फिर भी खड़ा हो जाएगा। यह तो रात को भी, जिस घड़ी आओ उस घड़ी हम 'टेन्शन' रहित ही रहते हैं न, तो झंझट ही नहीं न! हमारी तबियत अंदर से नरम हो जाए तो कोई कहेगा, 'दादा तो हँस रहे हैं!' अरे, 'टेन्शन' नहीं है इसलिए हँस रहे हैं! यानी किसी और की झंझट में नहीं पड़ना है। अगर इस शरीर की झंझट में भी पड़े कि 'इसका ऐसा हो गया, ऐसा हो गया,' तो 'टेन्शन' हो जाएगा न!

प्रश्नकर्ता : 'जहाँ प्रेम है, वहाँ *नोंध* नहीं होती।' यह बहुत बड़ी बात निकली।

दादाश्री : हाँ, जिस प्रेम में *नोंध* हो, वहाँ प्रेम नहीं है! इस जगत् का प्रेम तो *नोंध* वाला है। 'आज मुझे ऐसा कह गया,' ऐसा कहे, तो फिर वह कैसा प्रेम? यदि प्रेम है तो *नोंध* नहीं चाहिए। नहीं तो आसक्ति हो जाएगी। जो प्रेम कम-ज़्यादा होता है उसे आसक्ति कहते हैं। तो यह जगत् तो *नोंध* रखे बिना रहता ही नहीं न! भले ही मुँह पर नहीं कहे लेकिन मन में कहेंगे, 'मुझे परसों कह गए थे।' वह अपने मन में रखता है न?

इसलिए *नोंध* तो है न उसके पास? जिसके पास *नोंध* नहीं है, उनका प्रेम सच्चा! हमारे पास *नोंध* बही है ही नहीं तो फिर खाता (अकाउन्ट) कहाँ से होगा? *नोंध* बही होगी तो खाता होगा। अब आप *नोंध* बही फेंक देना। उसे किसी दूसरे सेठ को दे देना। *नोंध* बही रखने जैसी नहीं है!

प्रश्नकर्ता : यदि *नोंध* रखे कि 'तूने मुझे ऐसा कहा, तूने ऐसा कहा।' उससे फिर वापस प्रेम टूट जाता है।

दादाश्री : हाँ, लेकिन *नोंध* रखे बगैर नहीं रहता। पत्नी भी रखती है न? तेरी पत्नी नहीं रखती?

प्रश्नकर्ता : दादा, वह तो सभी रखते हैं लेकिन प्रतिक्रमण करके ज्ञान द्वारा इस *नोंध* को पौंछा जा सकता है न?

दादाश्री : उसे कैसे भी पौंछने जाओगे न, फिर भी कुछ नहीं होगा। *नोंध* रखी तभी से, पौंछने से कुछ नहीं होगा। *नोंध* ढीली हो सकती है लेकिन वह बोले बगैर रहते नहीं है न! ये भाई चाहे कुछ भी करें या फिर आपमें कितना भी बदलाव आ जाए फिर भी हम उसकी *नोंध* नहीं रखते। हमें किसी प्रकार की दखल ही नहीं है न! क्या तूने देखा है? 'दादा' को कभी तेरे बारे में *नोंध* रही है, ऐसा?

प्रश्नकर्ता : कभी भी नहीं।

दादाश्री : हाँ, किसी की भी *नोंध* नहीं रहती।

प्रश्नकर्ता : इसीलिए वह शुद्ध प्रेम कहलाता है?

दादाश्री : हाँ, वह शुद्ध प्रेम कहलाता है। तभी तो तू मुझे कभी भी अप्रिय लगता ही नहीं है, तू मुझे प्रिय ही लगता रहता है। तूने परसों कुछ उल्टा किया हो, उससे मुझे कुछ लेना-देना नहीं है। मैं *नोंध* रखूँ तब झंझट रहेगी न! मैं जानता हूँ कि तुझमें से तो कमज़ोरी नहीं गई है इसलिए उल्टा ही होगा न!

प्रेम में होती है विशालता

आपने अपने प्रेम को संकुचित कर दिया है, कि 'यह मेरी वाइफ और ये बच्चे।' जबकि मेरा प्रेम विशाल है।

प्रश्नकर्ता : प्रेम इतना संकुचित हो सकता है कि एक ही पात्र के प्रति सीमित रहे?

दादाश्री : जो संकुचित रहे ही नहीं, उसी को प्रेम कहते हैं। संकुचित हो कि इतने 'एरिया' जितना ही, तब तो आसक्ति कहा जाएगा। और वह संकुचित कैसा? यदि चार भाई हों और चारों के तीन-तीन बच्चे हों और इकट्ठे रहते हों तो तब तक घर में सभी 'हमारा-हमारा' बोलते हैं। 'हमारे प्याले फूट गए' सब ऐसा बोलते हैं। चारों जब अलग हो जाएँ तब उसके दूसरे दिन, आज बुधवार के दिन अलग हुए तो गुरुवार के दिन वे कुछ अलग ही बोलते हैं, 'यह आपका और यह हमारा।' यों संकुचितता आती जाती है। पूरे घर में प्रेम जो फैला हुआ था वह, अब ये अलग हुए इसलिए संकुचित हो गया। फिर पूरे मोहल्ले की तरह, युवक मंडल की तरह करना हो तो वापस उनका प्रेम एक हो जाता है। बाकी जहाँ प्रेम है, वहाँ संकुचितता नहीं होती, विशालता होती है।

निराग्रहता से प्रकट शुद्ध प्रेम

प्रेमस्वरूप कब हुआ जाएगा? नियम-वियम न ढूँढो, तब। यदि नियम ढूँढोगे तो प्रेमस्वरूप नहीं हुआ जा सकेगा! जो कहे, 'क्यों देर से

आए', तो वह प्रेमस्वरूप नहीं कहा जाएगा जब प्रेमस्वरूप बन जाओगे तब लोग आपकी सुनेंगे। हाँ, अगर आप आसक्ति वाले हो तो आपका कौन सुने?

जहाँ प्रेम नहीं दिखाई दें, वहाँ मोक्ष का मार्ग ही नहीं। हमें कहना भी नहीं आए, तब भी वह प्रेम रखे, तभी सच्चा (प्रेम) है।

अत: एक ईमानदारी और दूसरा प्रेम, ऐसा प्रेम जो कम-ज़्यादा नहीं होता। इन दो जगहों पर भगवान रहते हैं। जहाँ प्रेम है, निष्ठा है, पवित्रता है, वहीं पर भगवान हैं।

पूरा 'रिलेटिव डिपार्टमेन्ट' (अनात्म विभाग) पार कर जाए तब निरालंब होता है, तब प्रेम उत्पन्न होता है। सच्चा 'ज्ञान' कहाँ होता है? जहाँ प्रेम से काम लिया जाता हो वहाँ। प्रेम हो वहाँ लेन-देन नहीं होता। प्रेम हो वहाँ एकता होती है। जहाँ फीस होती है, वहाँ प्रेम नहीं होता। लोग फीस रखते हैं न, पाँच-दस रुपये, कि 'आना, आपको सुनना हो तो, यहाँ नौ रुपये फीस है' कहेंगे तो व्यापार हो गया! वहाँ प्रेम नहीं है। जहाँ रुपये हों, वहाँ प्रेम नहीं होता। दूसरा, जहाँ प्रेम है, वहाँ ट्रिक नहीं होती और जहाँ ट्रिक है, वहाँ प्रेम नहीं होता।

जहाँ पर सोता है, वहीं का ही आग्रह हो जाता है। चटाई पर सोता हो तो उसका आग्रह हो जाता है और डनलप के गद्दे पर सोता हो तो उसका आग्रह हो जाता है। चटाई पर सोने के आग्रह वाले को गद्दे में सुलाएँ तो उसे नींद नहीं आती। आग्रह ही विष है और निराग्रहता ही अमृत है। जब तक निराग्रहीपन उत्पन्न नहीं होता तब तक जगत् का प्रेम संपादन नहीं होता। शुद्ध प्रेम निराग्रहता से उत्पन्न होता है और शुद्ध प्रेम ही परमेश्वर है।

प्रेम के पावर में देखने को नहीं मिलती सत्ता

सामने वाले का अहंकार खड़ा ही नहीं होता। हमारी आवाज़ सत्ता वाली नहीं होती। सत्ता नहीं होनी चाहिए। बेटे को आप कहो न, तो सत्ता वाली आवाज़ नहीं होनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : हाँ, आपने कहा था कि कोई अपने लिए दरवाज़े बंद कर दे, उससे पहले ही हमें रुक जाना चाहिए।

दादाश्री : हाँ, सही बात है। वे दरवाज़े बंद कर दे, उससे पहले हमें रुक जाना चाहिए। उसे बंद करने पड़ें, वहाँ तक पहुँच जाएँ तो, अपनी मूर्खता कही जाएगी। ऐसा नहीं होना चाहिए और सत्ता वाली आवाज़ तो मेरी कभी भी निकली ही नहीं है। सत्ता वाली आवाज़ नहीं होनी चाहिए। बच्चा छोटा हो तब तक सत्ता वाली आवाज़ दिखानी पड़ती है कि, 'चुप बैठ जा।' तब भी मैं तो प्रेम ही दिखता हूँ। मैं तो प्रेम से ही वश में करना चाहता हूँ।

प्रश्नकर्ता : प्रेम में जितना पावर है, उतना सत्ता में नहीं है न?

दादाश्री : नहीं। लेकिन आपको प्रेम उत्पन्न नहीं होता है न, जब तक वह कचरा निकल न जाए! सारा कचरा निकालती है या नहीं निकालती? कितने हार्ट वाले! जो हार्टिली हैं न, उनके साथ दखल नहीं करना। तुझे उसके साथ अच्छी तरह रहना चाहिए। बुद्धि वाले के साथ दखल करना, अगर करना हो तो।

पौधा लगाया हो तो, आपको उसे डाँटते नहीं रहना चाहिए कि, 'देख तू टेढ़ा मत होना, बड़े फूल लाना।' हमें उसे खाद और पानी देते रहना है। यदि गुलाब का पौधा इतना सब काम करता है तो फिर ये बच्चे तो इंसान हैं और माँ-बाप पीटते भी हैं, मारते भी है!

हमेशा प्रेम से ही सुधरती है दुनिया। उसके अलावा दूसरा कोई उपाय ही नहीं है उसके लिए। यदि धाक से सुधर जाता न, तो यह सरकार लोकतंत्र उड़ा देती और जो कोई गुनाह करे, उसे जेल में डाल देते और फाँसी लगा देते। प्रेम से ही सुधरता है जगत्।

प्रेम में निभा लेते हैं सभी भूलें

घर वालों से फायदा हुआ, ऐसा कब कहेंगे कि जब घर वालों को हम पर प्रेम आए, हमारे बगैर उन्हें अच्छा नहीं लगे और उन्हें ऐसा लगता रहे, 'कब आएँ, कब आएँ।' लोग शादी करते हैं लेकिन प्रेम नहीं है, यह तो सिर्फ विषय आसक्ति है। यदि प्रेम होता तो एक-दूसरे के बीच चाहे कितना भी विरोधाभास होते उसके बावजूद भी प्रेम नहीं जाता। जहाँ प्रेम नहीं होता वह आसक्ति कहलाती है। आसक्ति अर्थात् संडास! पहले तो इतना प्रेम था कि अगर पति परदेस गया हो और यदि वह वापस नहीं आए तो सारी ज़िंदगी उसका चित्त उसी में रहता था, दूसरा कुछ याद ही नहीं आता था। जबकि आजकल तो यदि दो साल तक पति न आए तो दूसरा पति कर लेती है! इसे प्रेम कैसे कहेंगे? यह तो संडास है, जैसे संडास बदलते हैं, वैसे! जो *गलन* (डिस्चार्ज) है, उसे संडास कहते हैं। प्रेम में तो अर्पणता होती है!

प्रेम अर्थात् लगन लगे। वह पूरे दिन याद आया करे। शादी दो रूप में परिणामित होती है, कभी आबादी में जाती है तो कभी बरबादी में जाती है। जो प्रेम बहुत उफनता है वह वापस शांत हो जाता है। जिसमें उफान है, वह आसक्ति है। अत: जहाँ उफान हो, उससे दूर रहना। लगन तो आंतरिक होनी चाहिए। यदि बाहर का खोखा बिगड़ जाए, सड़ जाए तब भी प्रेम उतना ही रहना चाहिए। यह तो हाथ जला हो और यदि हम कहें कि 'ज़रा धुलवा दो' तो पति कहेगा कि 'नहीं, मुझ से नहीं देखा जाता!' अरे, उस दिन तो हाथ को सहला रहा था और आज क्यों ऐसा? ऐसी घृणा कैसे चलेगी? जहाँ प्रेम है, वहाँ घृणा नहीं और जहाँ घृणा है, वहाँ प्रेम नहीं। संसारी प्रेम भी ऐसा होना चाहिए कि जो एकदम से कम न हो जाए या एकदम से बढ़ न जाए, नोर्मेलिटी में होना चाहिए।

प्रेम सभी जगह होना चाहिए। पूरे घर में प्रेम ही होना चाहिए। जहाँ प्रेम है वहाँ कोई भूल नहीं निकालता। प्रेम में भूल नहीं दिखाई देती। यह प्रेम नहीं है इगोइज़म है, 'मैं पति हूँ' ऐसा भान है। प्रेम तो उसे कहते हैं कि जिसमें गलती न लगे। चाहे कितनी भी भूलें हो फिर भी प्रेम में निभा लेते हैं। आपको समझ में आता है, क्या?

प्रश्नकर्ता : हाँ जी।

दादाश्री : अर्थात् यदि भूलचूक हो जाए तो प्रेम के खातिर चला लेना। यदि तुझे बेटे पर प्रेम होगा तो बेटे की भूल नहीं दिखाई देगी। शायद भूल होगी, उसमें कोई हर्ज नहीं। प्रेम सबकुछ निभा लेता है, निभा लेता है न?

जो अपने आपको होम दे, वह है सच्चा प्रेम

सत्युग में प्रेम था। सत्युग में अच्छा था। कलियुग में तो सभी ऐसे विचित्र हैं न, अच्छा पति खोजकर ले आते हैं एकदम सुंदर और फिर कडुआ निकलता है और बेचारी की पूरी ज़िंदगी बिगड़ जाती है। एक दिन यदि खाना अच्छा नहीं तो प्रेम वाला पति कहीं क्लेश करता है कभी? पर नहीं, यह तो क्लेश करता है, 'तुझमें अक्ल नहीं है, तू ऐसी है, तू वैसी है' कहेगा। रोज़ाना अच्छा पकाती है तब इनाम नहीं देता लेकिन अगर एक ही दिन अच्छा नहीं बने तो उस दिन उसकी

शामत आ जाती है! यानी कि प्रेम जैसा कुछ नहीं है, प्रेम ही नहीं है, स्वार्थ ही है सारा।

जहाँ बहुत प्रेम है, वहीं अरुचि पैदा होना मानव स्वभाव है। जिसके प्रति प्रेम है न, तो जब बीमार होते है तब उसी के प्रति ही अरुचि हो जाती है। वह हमें अच्छा नहीं लगता। 'आप जाओ यहाँ से, दूर जाकर बैठो' ऐसा कहना पड़ता है।

यदि किसी ने पत्नी के साथ अच्छी तरह से व्यवहार किया हो, तब भी मैं उसे समझदार व्यक्ति कब कहूँगा, कि जैसा व्यवहार पंद्रह साल की उम्र में था, अस्सी साल की उम्र तक भी वैसे का वैसा ही व्यवहार रहे, उतना ही प्रेम रहे, उतर न जाए तब मैं कहूँगा कि वह समझदार है। यह तो वह कमजोर दिखाई दे इसलिए फिर उस पर चिढ़ता रहता है। अरे, एक फोड़ा हो जाए तब क्या उसे साथ में घूमाने ले जाएगा? सिनेमा दिखाने नहीं ले जाएगा साथ में? जब जल जाए या पीप निकले तब? अत: यह सारी जोखिमदारी नहीं समझनी है और प्रेम करना है! आए बड़े प्रेम करने वाले! प्रेम तो उसे कहते हैं कि हर तरह से साथ दे। यदि उसका हाथ जल जाए तब अपना हाथ जलने के बराबर लगे, जब ऐसा हो तब उसे प्रेम कहेंगे। यदि उसे फोड़ा हो जाए तब ऐसा लगे कि हमें हुआ। यदि हमें हो जाए तो हम बाहर जाएँगे या नहीं? तो फिर यदि पत्नी को हो जाए तो क्या उसे साथ में नहीं ले जाएँ? जिस प्रेम में खुद अपने आपको होम दे, खुद की 'सेफसाइड' रखे बगैर खुद को होम दे वही सच्चा प्रेम है। वह बात तो अभी मुश्किल है।

प्रश्नकर्ता : ऐसे प्रेम को क्या कहेंगे? इसे अनन्य प्रेम कहेंगे?

दादाश्री : इसे प्रेम कहेंगे संसार में। इसे आसक्ति नहीं मानेंगे और इसका फल भी बहुत उत्तम मिलेगा लेकिन ऐसे खुद अपने आपको होम देना, ऐसा होता नहीं है न! यह तो खुद अपनी ही 'सेफसाइड'(सलामती) रखकर काम करते रहते हैं और जो 'सेफसाइड' नहीं करें, ऐसी स्त्रियाँ कितनी हैं और ऐसे पुरुष कितने?

यह तो सिनेमा देखने जाते समय भी आसक्ति के तान में और लौटते समय कहता है 'बेअक्ल है।' तब वह कहती है, 'आपमें कहाँ बरकत है?' ऐसी बातें करते-करते घर आते हैं। यह अक्ल ढूँढता है तब वह बरकत देखती है!

निर्मल प्रेम की तो बात ही अलग

घाट विनाना निर्मल प्रेमनी
(नि:स्वार्थ निर्मल प्रेम की)
पंदरे क्षेत्रोमां फेली जो सुवास...

– नवनीत

नि:स्वार्थ प्रेम सीख आओ सभी, वह सीखने लायक है। यों प्रेम तो हर कोई रखता है लेकिन नि:स्वार्थ प्रेम की तो बात ही अलग है न! ये सब जो रखते हैं न, वे सब प्रेम नहीं रखते? लेकिन अब सिर्फ अंदर से स्वार्थ निकाल लें तो क्या होगा? पंद्रह क्षेत्रों में खुश्बू फैलेगी, कविराज ऐसा कहते हैं!

अंदर से सभी स्वार्थ निकाल लें तो फिर क्या बचा? निर्मल प्रेम बचा! 'यह मेरे काम का है' ऐसा विचार आना ही क्यों चाहिए? कुछ लोगों को तो कुछ भी नहीं हुआ हो, फिर भी यदि कोई डॉक्टर आए, तब खड़े होकर कहेगा, 'आइए डॉक्टर, आइए!' मन में कहेगा कि, 'कभी काम आएँगे।' अरे, तू बीमार पड़ेगा कब और यह मिलेगा कब? काम का कब तक है? अरे, रसोईया रास्ते में मिल जाए तो वह उसे 'अरे, इधर आ, इधर आ।' करता है! अरे भाई, क्यों

इन्हें आप इतना बुला रहे हो? तब कहेगा, 'कभी काम पड़े, तब रसोईये को बुला सकेंगे न!' कैसे मतलबी! जैसे यहाँ से जाना ही नहीं हो न, ऐसी बातें करते हैं! जैसे कभी भी अर्थी नहीं निकलेगी ऐसी बातें करते हैं न!

स्वार्थ क्यों रखते हो, जहाँ अर्थी निकलनी है वहाँ? जहाँ अर्थी निकलनी हो, क्या वहाँ स्वार्थ रखना चाहिए? 'कभी काम में आएँगे।' अरे, जहाँ अर्थी निकलनी हो, उस देश में, 'कहीं कभी' होता होगा? कुछ दिनों बाद अर्थी निकलनी है! जिस डॉक्टर से आशा रखी, वह डॉक्टर यहाँ से चला जाता है, फिर भी लोग ऐसा सब देखते हैं न, कि 'डॉक्टर काम के हैं, वकील काम के हैं,' ऐसा नहीं देखते? हाँ, कोई सेठ आ जाएँ, तब भी कहेंगे, 'हाँ, काम के हैं।' तब 'आइए, आइए सेठ, आइए' करते हैं। 'कभी सौ रुपये माँगेंगे तो मिलेंगे!' लोग मतलब से ही बुलाते रहते हैं न! सारा मतलबी प्रेम तो ऐसा नहीं होना चाहिए।

शुद्ध-निर्मल प्रेम! इसके अलावा उससे कोई आशा रखनी ही नहीं चाहिए। इन दो हाथों वाले लोगों से क्या आशा रखनी? कहीं भी पाँच हाथों वाले लोग देखे हैं? ये तो, जब संडास लगे तब दौड़ते हैं। इनसे भला क्या आशा रखनी? अरे, जुलाब लिया हो न, तो बड़ा कलेक्टर हो वह भी भाग-दौड़ करेगा! अरे, तू कलेक्टर है तो ज़रा धीरे से चल न! तब कहेगा कि, 'नहीं, जुलाब हो गया है!' तब तो तुझ से आशा रखने जैसी नहीं है। तू आशा रखने जैसा इंसान है ही नहीं। इनसे क्या आशा रखनी? क्या ये मतलब रखने जैसे हैं? आपको कैसा लगता है?

प्रश्नकर्ता : जैसा दादा कहते हैं, वैसा ही है।

दादाश्री : हाँ, इसलिए साफ कर दो न, अगर अभी भी ज़रा कुछ मैला रह गया हो तो! घर में भी साफ रखना। मतलबी प्रेम मत रखना। 'ये मेरे क्या काम आएँगे' ऐसा नहीं होना चाहिए।

शुद्धात्मा की तरफ दृष्टि, वही प्रेम! फिर पत्नी को यहाँ पर बड़ी सी रसौली निकल आए, तब भी आपको मन में क्लेश नहीं होगा! नहीं तो जब तक चेहरा अच्छा दिखे, तब तक उसके प्रति अच्छा भाव रहेगा और यहाँ पर रसौली निकली कि खटकने लगेगा। ऐसा होता है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : होता है, दुर्भाव हो जाता है।

दादाश्री : अरे, अभाव होता है, अभाव!

अब, सभी कुछ स्वार्थी हो गया है। छोड़ो न, किसी भी चीज़ की ताक में मत रहना। यदि अपने आप दे जाए तो ठीक है, नहीं तो ऐसे ही चलाना न! भला इन भौतिक चीज़ों की ताक में क्या रहना? 'ताक में रहना,' अर्थात्, स्त्री पर कुदृष्टि रखना और ताक में रहना, ये दोनों एक समान हैं! बाप बेटे से कुछ पाने की ताक में रहता है और बेटा भी बाप से कुछ पाने की ताक में रहता है! क्या घर में भी स्वार्थ नहीं है?

यानी यह सारा निरा स्वार्थ वाला है। सिर्फ यही एक स्वार्थ रहित स्थान है इसीलिए यहाँ पर सभी एकता अनुभव करते हैं। जहाँ कुछ पाने की ताक में नहीं रहते, वहाँ परमात्मा अवश्य होते हैं। मतलबीपने से भगवान दूर रहते हैं! इसलिए यहाँ पर इन सब को आनंद आता है, सभी को कैसी एकता अनुभव होती है!

सच्चा प्रेम तो 'ज्ञानी' के पास है

जगत् आसक्ति को प्रेम मानकर उलझता है। स्त्री को पति से काम है और पति को स्त्री से, यह सब काम से ही खड़ा हुआ है। काम नहीं होता तो अंदर सभी शोर मचाते हैं, चिल्लाते हैं, हल्ला करते हैं। संसार में एक मिनट के लिए

भी कोई अपना नहीं बना है। कोई अपना नहीं बनता। वह तो जब ऐसा कुछ हो, तब पता चलता है। अगर एक घंटा हम बेटे को डाँटें तब पता चलेगा कि बेटा अपना है या पराया? दावा दायर करने के लिए भी तैयार हो जाता है। तब बाप भी क्या कहता है? 'मेरी अपनी कमाई है। तुझे एक पाई नहीं दूँगा।' तब बेटा कहता है, 'मैं आपसे ज़बरदस्ती ले लूँगा।' इसमें क्या *पोतापणुं* (मेरापन) रखना चाहिए? सिर्फ ज्ञानी पुरुष ही अपने बनते हैं।

आपको पति से प्रेम की आशा नहीं रखनी है और अगर वह हमसे प्रेम की आशा रखे तो वह मूर्ख है। यहाँ तो बस अपने काम से काम रखना है। होटल वाले के साथ घर बसाने जाते हैं क्या हम कभी? चाय पीने जाते हैं तो पैसे देकर चले जाते हैं। उसी तरह, काम से काम रखना है हमें।

बाकी, इसमें प्रेम जैसी चीज़ है ही नहीं है। इस संसार में प्रेम मत ढूँढना। किसी भी जगह पर प्रेम नहीं है। प्रेम तो ज्ञानी पुरुष के पास है।

प्रश्नकर्ता : ज्ञानी पुरुष के सच्चे प्रेमस्वरूप के बारे में विस्तार सहित बताइए न!

दादाश्री : हम एक ही दृष्टि से देखते हैं। सच्चे प्रेम से। इन भाई के फॉरेन डिपार्टमेन्ट को हम नहीं देखते हम होम डिपार्टमेन्ट की ही जानकारी रखते हैं। फॉरेन तो किसी का सड़ा हुआ होता है, किसी का अच्छा भी होता है, किसी का खराब होता है। किसी का रत्नागिरी हाफूस जैसा होता है, कोई लंगड़े जैसा होता है। हम किसी की झंझट में नहीं पड़ते। हमारा संबंध तो होम डिपार्टमेन्ट से, उसके शुद्धात्मा से है। यदि उसे कुछ अड़चन आ जाए तो हमसे हो सके उतना उसके लिए उपाय करते हैं ।

प्रश्नकर्ता : दादा को तो पता चल जाता है कि यह सच्चा प्रेम है या झूठा लेकिन हमें वह कैसे पता चलेगा?

दादाश्री : आपका प्रेम जितना झूठा (आसक्ति) होगा, उतना ही सब आपसे आकर्षित होंगे और वे ही आपसे राग-द्वेष से चिपकेंगे। जब तक आपके पास आसक्ति की पूँजी है, तब तक वह पूँजी मिलती ही रहेगी और यदि आपके पास वह पूँजी नहीं रहेगी तो फिर वह पूँजी नहीं मिलेगी।

सच्चा प्रेम लाए कहाँ से?

प्रश्नकर्ता : तो वैसा सच्चा प्रेम कैसे लाए?

दादाश्री : सच्चा प्रेम कहाँ से लाए? वह तो अहंकार और ममता जाने के बाद ही प्रेम होता है। अहंकार और ममता गए बिना सच्चा प्रेम उत्पन्न नहीं हो सकता। सच्चा प्रेम यानी वह वीतरागता में से उत्पन्न होने वाली चीज़ है। द्वंद्वातीत होने के बाद वीतराग होता है। द्वैत और अद्वैत तो द्वंद्व हैं। अद्वैत वाले को द्वैत के विकल्प आया करते हैं। 'वह द्वैत, वह द्वैत, वह द्वैत!' उससे बल्कि द्वैत चिपक जाता है। अद्वैत पद अच्छा है लेकिन अद्वैत से तो एक लाख मील जाने के बाद वीतरागता का पद आएगा और वीतरागता का पद आने के बाद अंदर प्रेम उत्पन्न होगा और वह जो प्रेम उत्पन्न होता है, वह परमात्म प्रेम है।

संपूर्ण वीतरागता, वही है प्रेम

प्रश्नकर्ता : दादा, कुछ इस प्रकार बात निकली थी कि 'वीतरागों में दर्शन होता है, प्रेम नहीं होता यानी कि खटपटिया वीतराग हैं। हम प्रेमस्वरूप हुए इसलिए संपूर्ण वीतरागता नहीं उत्पन्न हुई।' वह ज़रा समझना था। प्रेमस्वरूप और संपूर्ण वीतरागता, ये दोनों एक ही हैं क्या?

दादाश्री : संपूर्ण वीतरागता में प्रेम ही होता है। प्रेम मतलब क्या? किसी के लिए ज़रा सा भी भाव नहीं बिगड़े, वही प्रेम कहलाता है। संपूर्ण वीतरागता वही प्रेम कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : किसी के भी दोष नहीं दिखाई देते?

दादाश्री : दोष की तो बात ही कहाँ रही, वह तो समझो कि दिखाई ही नहीं देते लेकिन उसमें तो यदि सामने वाला उल्टा करे तब भी किंचित्मात्र भी प्रेम कम नहीं हों तो।

प्रेमस्वरूप अर्थात् जब वीतरागता हो, तब प्रेमस्वरूप बनता है। जितनी वीतरागता, उतना ही प्रेमस्वरूप बना।

प्रश्नकर्ता: नहीं। यानी कि वहीं पर दो बातें इस प्रकार से थीं, अलग थीं। अर्थात् वीतरागों का दर्शन कहलाता है जबकि हमारा प्रेम कहलाता है। हमारी यह वीतरागता नहीं कहलाती।

दादाश्री : हाँ, वीतरागता अर्थात् हमारा यह प्रेम यों दिखाई देता है और इन वीतरागों का प्रेम दिखाई नहीं देता लेकिन सच्चा प्रेम तो उन्हीं का कहा जाएगा और हमारा यह प्रेम दिखाई देता है लेकिन वह सच्चा प्रेम नहीं कहा जाएगा। एक्ज़ेक्टली (संपूर्ण) जिसे प्रेम कहा जाता है न, वह यह प्रेम नहीं कहलाएगा। एक्ज़ेक्टली तो वहाँ संपूर्ण वीतरागता रहती है यह तो चौदस है, अभी यह पूनम नहीं है!

प्रश्नकर्ता : यानी कि पूनम वाले का प्रेम इससे भी अधिक होता है?

दादाश्री : वही सच्चा प्रेम है! इस में कहीं पर कमी भी रह सकती है। अत: पूनम वाले का प्रेम ही सच्चा है।

प्रश्नकर्ता : दादा, संपूर्ण वीतराग हों लेकिन प्रेम न हो, ऐसा तो हो ही नहीं सकता न?

दादाश्री : प्रेम के बिना ऐसा हो ही नहीं सकता न!

द्वेष निर्मूल होने पर शुद्ध प्रेम का अनुभव होता है

प्रश्नकर्ता : अर्थात् प्रेम को उस संदर्भ में कहा होगा कि द्वेष का अभाव होना?

दादाश्री : द्वेष का अभाव तो आपको भी हुआ है। जब हम ज्ञान देते हैं न तभी से द्वेष का अभाव हो जाता है, वह वीतद्वेष बन जाता है फिर बाद में वीतराग बनना शेष रहा।

प्रश्नकर्ता : तो प्रेम का स्थान कहाँ है? तो फिर प्रेम की स्थिति किस जगह है?

दादाश्री : प्रेम तो, वह जितना वीतराग होता जाएगा उतना प्रेम उत्पन्न होता जाएगा। संपूर्ण वीतराग का संपूर्ण प्रेम!

प्रश्नकर्ता : जहाँ संपूर्ण वीतराग वहाँ संपूर्ण प्रेम?

दादाश्री : वीतद्वेष तो आप सब हो ही चुके हो। अब धीरे-धीरे वीतराग होते जाओ, हर बात में। इसमें वह अनुभव हो गया, वही वीतराग। इसका अनुभव वीतराग होते, होते, होते, होते, किसी-किसी मनुष्य की वृत्तियाँ ऐसी होती है कि वह (संपूर्ण) वीतराग न भी हुआ हो। मुझे पूरा जगत् निर्दोष दिखाई देता है लेकिन वह श्रद्धा से। श्रद्धा से यानी दर्शन में और अनुभव में भी आया है कि निर्दोष है ही। अनुभव में हंड्रेड परसेन्ट आ गया है।

शुद्ध प्रेम से ही रोग और घाव भरते जाते हैं। वह प्रेम तो घटता ही नहीं। उस प्रेम की

हूँफ (सहारा) तो बहुत अलग ही तरह की होती है। अलौकिक प्रेम की *हूँफ* तो बहुत ही अलग है, वह *हूँफ* ही अलग होती है। प्रेम तो सब से बड़ी चीज़ है!

जहाँ शुद्ध प्रेम, वहाँ प्रकट परमात्मापन

'शुद्ध प्रेम' ऐसी चीज़ है कि किसी से किंचित्मात्र भी इफेक्टिव (असर वाला) नहीं होता। *लागणी* (लगाव) जड़ हैं इसलिए 'इफेक्टिव' है। 'शुद्ध प्रेम' चेतन है और अनइफेक्टिव (असर मुक्त) है। किसी से प्रभावित हो जाते हो क्या आप?

प्रश्नकर्ता : यदि कोई शुद्ध प्रेमी हो।

दादाश्री : नहीं, दूसरी जगहों पर, घर पर भी या कहीं भी जाओ, वहाँ पर?

प्रश्नकर्ता : किसी से भी प्रभावित नहीं होते हैं। सिर्फ आप जैसों से प्रभावित हो जाते हैं, दादा।

दादाश्री : हमारा प्रेम शुद्ध है इसलिए लोगों पर असर होता है, लोगों को फायदा होता है, नहीं तो फायदा ही नहीं होगा न! सिर्फ कभी जब 'ज्ञानी पुरुष' या भगवान हों, तब प्रेम देख सकता है। उस प्रेम में कमी-बढ़ौतरी नहीं होती, अनासक्त होता है। ज्ञानियों का वह प्रेम, वही परमात्मा है। सच्चा प्रेम ही परमात्मा है, परमात्मा और कोई चीज़ नहीं है। जहाँ सच्चा प्रेम है, वहाँ परमात्मापन प्रकट होता है।

अत: 'ज्ञानी' का जो शुद्ध प्रेम दिखाई देता है, यों उघाड़ा दिखाई देता है, वही परमात्मा है। परमात्मा अन्य कोई चीज़ नहीं है। जो शुद्ध प्रेम दिखाई देता है, जो बढ़ता नहीं, घटता नहीं, एक समान ही रहा करता है, वही है परमात्मा, उघाड़े-निरावृत परमात्मा! और ज्ञान सूक्ष्म परमात्मा है, उसे समझने में देर लगेगी इसलिए परमात्मा को ढूँढने बाहर नहीं जाना है।

प्रेम तो ज्ञानी पुरुष से लेकर ठेठ तीर्थंकर भगवान तक है। उन लोगों के पास प्रेम का लाइसेन्स है। वे प्रेम से ही लोगों को सुखी कर देते हैं। वे फिर प्रेम से ही बाँधते हैं, छूट नहीं सकते। 'ज्ञानी पुरुष' से लेकर, ठेठ तीर्थंकर तक सभी प्रेम वाले। अलौकिक प्रेम, जिसमें नाममात्र भी लौकिक नहीं है!

अहंकार विलय होते ही छलकता है शुद्ध प्रेम

प्रश्नकर्ता : अभी दुनिया में सभी लोग शुद्ध प्रेम के लिए बेहद प्रयत्न कर रहे हैं।

दादाश्री : यह रास्ता शुद्ध प्रेम का ही है। अपना यह जो विज्ञान है न, किसी भी तरह की, किसी भी प्रकार की इच्छा रहित है इसलिए शुद्ध प्रेम का यह रास्ता निकला है। वर्ना इस काल में होता नहीं। इस काल में उत्पन्न हुआ, वह आश्चर्य हुआ है!

जब तक अहंकार है, तब तक शुद्ध प्रेम आ ही नहीं सकता न! अहंकार और शुद्ध प्रेम दोनों साथ में रह ही नहीं सकते। शुद्ध प्रेम कब आता है? जब अहंकार विलय होने लगता है, तभी से शुद्ध प्रेम आने लगता है और जब अहंकार संपूर्ण रूप से विलय हो जाता है, तब शुद्ध प्रेम की मूर्ति बन जाता है। शुद्ध प्रेम की मूर्ति, वही परमात्मा है। वहाँ पर आपका सभी प्रकार का कल्याण हो जाता है। वे निष्पक्षपाती होते हैं, कोई पक्षपात नहीं होता। शास्त्रों से पर होता है। चार वेद पढ़ने के बाद वेद 'इटसेल्फ' कहते हैं, 'दिस इज़ नॉट देट, दिस इज़ नॉट देट।' तो 'ज्ञानी पुरुष' कहते हैं, 'दिस इज़ देट, बस!' 'ज्ञानी पुरुष' तो शुद्ध प्रेम वाले, इसलिए तुरंत ही आत्मा दे देते हैं।

शुद्ध प्रेम और शुद्ध न्याय, ये दो गुण हैं उनके पास। जब इस जगत् में शुद्ध न्याय होने लगेगा, तब समझना कि यह भगवान की कृपा उतरी।

मेरे पास सिर्फ प्रेम का ही हथियार

प्रश्नकर्ता : हमें आपके प्रति जो भाव जागृत होता है, वह क्या है?

दादाश्री : वह तो, हमारा प्रेम आपको पकड़ लेता है। सच्चा प्रेम पूरे जगत् को पकड़ सकता है। प्रेम कहाँ-कहाँ है? प्रेम वहाँ है कि जहाँ अभेदता है।

आसक्ति कब कहलाती है कि जब कोई सांसारिक चीज़ लेनी हो, तब। सांसारिक चीज़ का हेतु हो तब। यह सच्चे सुख के लिए है तो फायदा होगा, उसमें हर्ज नहीं है। हम पर जो प्रेम रहता है, उसमें हर्ज नहीं है। वह आपकी हेल्प करेगा। दूसरी टेढ़ी जगहों पर होने वाला प्रेम उठ जाएगा।

प्रश्नकर्ता : तो क्या ऐसा है कि हममें जो भाव जागृत होता है वह आपके हृदय के ही प्रेम का परिणाम है?

दादाश्री : हाँ, प्रेम का ही परिणाम है। यानी प्रेम के हथियार से ही समझदार हो जाते हैं। मुझे डाँटना नहीं पड़ता।

मैं किसी से लड़ना नहीं चाहता। मेरे पास तो सिर्फ प्रेम का ही हथियार है, 'मैं जगत् को प्रेम से जीतना चाहता हूँ।' क्योंकि क्रोध-मान-माया और लोभ के वे हथियार मैंने नीचे रख दिए हैं इसलिए मैं वे काम में नहीं लेता। जगत् हथियार के कारण ही विरोध करता है।

जगत् जो समझता है वह तो लौकिक प्रेम है। प्रेम तो उसे कहते हैं कि आप मुझे गालियाँ दो फिर भी मैं डिप्रेस न हो जाऊँ और हार चढ़ाओ तो एलिवेट न हो जाऊँ, उसे प्रेम कहते हैं। सच्चे प्रेम में तो फर्क ही नहीं आता। इस देह के भाव में बदलानव आ सकता है, पर शुद्ध प्रेम में नहीं।

मनुष्य तो सुंदर हों तब भी अहंकार से बदसूरत दिखाई देते हैं। सुंदर कब दिखते हैं? तब कहें, प्रेमात्मा हो जाए तब। तब तो बदसूरत भी सुंदर दिखाई देता है। शुद्ध प्रेम प्रकट हो जाए तभी सुंदर दिखने लगता है। जगत् के लोगों को क्या चाहिए? मुक्त प्रेम। जिसमें स्वार्थ की गंध या किसी प्रकार का मतलब नहीं हो।

यह तो कुदरत का लॉ है। नैचुरल लॉ! क्योंकि प्रेम, वह खुद परमात्मा है।

रियल के प्रति हो जाओ सिन्सियर

प्रश्नकर्ता : यह बात ठीक तरह से समझ में आ गई कि जब तक प्रकट पुरुष के हृदय में से जिस प्रेम का अनुभव मिलता है, वही प्रेम है। उसके सिवा कुछ भी प्रेम नहीं है।

दादाश्री : यह तो, लोग भ्रांति से आसक्ति को प्रेम कहते हैं। जो कम-ज़्यादा हो, वह आसक्ति है, वह अटैचमेन्ट और डिटैचमेन्ट कहलाता है। जो कम-ज़्यादा नहीं होता, वही प्रेम है और वही परमात्मा प्रेम है, वही शुद्ध प्रेम है। शुद्ध प्रेम, वही परमात्मा प्रेम माना जाता है।

प्रश्नकर्ता :-अब हमें वैसा शुद्ध प्रेम उत्पन्न करना है।

दादाश्री : पूरा जगत् जब निर्दोष दिखाई देगा तब प्रेम उत्पन्न होगा। ये मेरे-तेरे कब तक लगता है? जब तक कि हम दूसरों को अलग मानते हैं। जब तक उनसे भेद है, तब तक ये मेरे अपने लगते हैं, इस कारण से अटैचमेन्ट वालों को अपना मानते हैं और डिटैचमेन्ट वालों को

पराया मानते हैं। वे किसी के साथ प्रेमस्वरूप नहीं रह सकते । यानी कि प्रेमस्वरूप, यह प्रेम वह परमात्मा गुण है। अत: वहाँ पर खुद के सभी दु:ख विस्मृत हो जाते हैं उस प्रेम से। अत: प्रेम से बंधने के बाद फिर बंधने को और कुछ रहा ही नहीं। ज्ञानी पुरुष के प्रति, आत्मा के प्रति, रियल के प्रति हमेशा सिन्सियरली रहना चाहिए और देह के प्रति, देहाध्यास वगैरह सब के साथ टुली रहना चाहिए।

प्रेम के पाठ सिखाते हैं दादा

धीरे-धीरे सभी के साथ शुद्ध प्रेम स्वरूप होना है।

प्रश्नकर्ता : शुद्ध प्रेम स्वरूप यानी किस तरह रहना चाहिए?

दादाश्री : अगर कोई व्यक्ति अभी गालियाँ दे गया और फिर आपके पास आया तब भी आपका प्रेम घटे नहीं तो वह शुद्ध प्रेम है। ऐसा प्रेम का पाठ सीखना है, बस। दूसरा कुछ नहीं सीखना है। मैं जो दिखाऊँ वैसा प्रेम होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा, वह प्रेम का पाठ सीखना है।

दादाश्री : बस। प्रेम किसे कहते हैं? जो आपको फूल चढ़ाए उस पर प्रेम बढ़ न जाए और कभी ऐसा बोले कि 'चंदूभाई, आपने मेरा बिगाड़ा है' तो तब घट न जाए। अब प्रेम का ऐसा पाठ सीखो, बस और कुछ नहीं सीखना है। जैसा प्रेम मैं करता हूँ वैसा होना चाहिए और वैसा प्रेम खुले परमात्मा हैं। कोई पूछे, 'परमात्मा दिखाई देते हैं क्या?' तब कहते हैं, 'देखो प्रेम।' बढ़े नहीं, घटे नहीं ऐसा प्रेम, वही परमात्मा है। वह प्रेम ही परमात्मा है। दिखाई देते हैं या नहीं दिखाई देते परमात्मा? अरूपी हैं लेकिन दिखाई देते हैं या नहीं? निरंजन हैं लेकिन दिखाई देते हैं या नहीं?

प्रश्नकर्ता : दिखाई देते हैं।

दादाश्री : हाँ, अब वैसा प्रेम सिखो। यह ज़िंदगी खत्म होने तक आ जाएगा या नहीं पूरा? कम्पलीट?

प्रश्नकर्ता : हाँ, आ जाएगा।

दादाश्री : हाँ, सब आ जाएगा। सिर्फ एक अवतार ही बाकी रहना चाहिए, वह भी पुण्य भोगने के लिए। हमारी आज्ञा का पालन करोगे न, तो उससे ज़बरदस्त पुण्य मिलेगा। ऐसा काफी लोगों को पक्का विश्वास तो हो गया है न कि मोक्ष का मार्ग मिल गया है? आपको विश्वास हो गया है या मेरा लिहाज़ रखने के लिए कह रहे हो?

प्रश्नकर्ता : हाँ, हाँ, विश्वास हो गया।

दादाश्री : सच बोल रहे हो। अनंत जन्मों से जो नुकसान हुआ है, उसकी भरपाई एक ही जनम में कर लेनी हो तो क्या करना पड़ेगा? पीछे पड़ना पड़ेगा। दादा के कहे हुए शब्दों के पीछे, दादा के पीछे। यदि दादा न हों तो दादा की कही हुए आज्ञा के पीछे। उसके पीछे पड़कर ही एक जनम में सारे नुकसान की भरपाई कर देनी है, अंनत जन्मों से हुए नुकसान। कितने जन्मों से हुए नुकसान? अभी तक अनंत जन्म लिए हैं न, वे सारे नुकसान। वह निकालना तो चाहिए न या नही?

प्रेम से रहना... प्रोमिस?

यह तो बात ही अलग है! इन भाई से हमारी आज्ञा का पालन होता है। इन की बहन से सभी आज्ञाओं का पालन नहीं हो पाता, कुछ

बाकी रह जाती हैं। धीरे-धीरे पालन कर सकेगी। वह लाएगी तो सही, ठिकाने पर ले आएगी।

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा।

दादाश्री : सही जगह पर पहुँचेगी तो सही, यदि इस अनुसार रही तो.... और यदि कभी उल्टा हो जाए तो फिर उल्टा भी घूम सकता है। इनकी माता जी कुछ नहीं कहतीं। कुछ नहीं कहती हो न इसे?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : और तू और पापा, आप दोनों ऐसा बोलोगे तो फिर उसे क्या होगा? तुझे क्या लगता है?

प्रश्नकर्ता : ठीक है, दादा।

दादाश्री (बहन को) : यदि तू प्रेम रखेगी तो अच्छा है, मेरी बहुत कृपा उतरेगी।

प्रश्नकर्ता : रखूँगी, दादा।

दादाश्री : तय कर आज से।

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा।

दादाश्री (भाई से) : (1) तुझे उसके साथ प्रेम रखना है? मुँह से बोल न!

प्रश्नकर्ता : हाँ, प्रेम रखूँगा, दादा।

दादाश्री : वह प्रेम रखे या न रखे, हमें नहीं देखना है।

प्रश्नकर्ता : हमें प्रेम रखना है, ठीक है।

दादाश्री : समझ में आता है, न तुझे? प्रेम जीतने का यही रास्ता है।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, आपने उस पर प्रेम रखने को कहा है न, यानी कि उसमें शुद्धात्मा देखना है, उसके दोष नहीं देखने हैं। ऐसा रखना है न?

दादाश्री : ऐसा नहीं, (2) यदि अभी कोई इसे डाँटे तो तू उससे लड़ने लगेगा न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : उसे क्या कहेंगे? प्रेम कहेंगे। इस पर तेरा प्रेम है।

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : बहुत प्रेम महसूस होता है। (3) यदि तू उससे प्रेम करता है और वह तुझे कुछ उल्टा कहे तो तुम समझोगे कि इसका स्वभाव (प्रकृति का भरा हुआ माल) ज़रा ऐसा है इसलिए तुझे तो इस पर सिर्फ प्रेम ही रखना है।

प्रश्नकर्ता : हाँ। मैं समझता हूँ।

दादाश्री : (4) अभी आप दोनों मतभेद करके बाहर निकलो और बाहर कोई इसका उल्टा बोलने लगे, तो?

प्रश्नकर्ता : इसके पक्ष में बोलूँगा।

दादाश्री : फिर भी इसके पक्ष में रहो तो वही प्रेम है। होगा, हमारे कहे अनुसार?

प्रश्नकर्ता : होगा ही, दादा।

दादाश्री : सौ प्रतिशत होगा?

प्रश्नकर्ता : हाँ, सौ प्रतिशत, दादा।

अब प्रेम स्वरूप बन जाओ

प्रेम कब उत्पन्न होता है? जब सामने वाले के साथ अभी तक हुई सभी भूलों की माफी माँग लो, तब प्रेम उत्पन्न होता है।

नीरू बहन : दादा, माफी माँगना तो बहुत ईज़ी, सरल है।

दादाश्री : मेरी बात अच्छी लगेगी? समझ में आ जाए तो अच्छी लगेगी।

नीरू बहन : दादा, खुद को छूटना है इसलिए पसंद आती है।

दादाश्री : छूटना है या दादा के साथ अभेद होना है।

नीरू बहन : अर्थात् दादा से नहीं, खुद के दोषों से छूटना है इसलिए अच्छी लगती है, दादा। दादा के साथ तो निरंतर अभेदता रखनी है।

दादाश्री : दादा के साथ अभेदता अर्थात् छूटना ही है, तो छूट ही जाएँगे।

नीरू बहन : हाँ, वह तो दादा के साथ।

दादाश्री : बाकी आप चाहे जितनी भी माफी माँगो, पैरों में गिरकर, फिर भी बेकार है। यदि आप दादा की आज्ञा के अनुसार करोगे कि, 'किसी से एक भी दोष नहीं हुआ है लेकिन मुझे दिखाई दिया इसलिए वहाँ मेरा ही दोष था।' सभी को जिससे प्रेम करना हो तो उसे इस तरह से करना है जिससे भीतर प्रेम उत्पन्न होगा। करना है या नहीं करना है प्रेम?

नीरू बहन : हाँ, दादा।

दादाश्री : हमारे तरीके से होना चाहिए। जिस तरीके से हम पार उतरे हैं, उसी तरीके से हम पार उतारते हैं। आपको अच्छा लगा?

नीरू बहन : हाँ, बहुत हल्का लगा, दादा।

दादाश्री : आप प्रेम उत्पन्न करोगे न? प्रेमस्वरूप बनेंगे तब सामने वाले से अभेदता रहेगी। हमारे साथ इसी तरह से हुआ है। वह तरीका बता दिया हमने।

अभेदता ही है प्रेम

दूर नहीं होना, वही प्रेम है। भेद नहीं डालना, वही प्रेम है। अभेदता हुई, वही प्रेम। वह प्रेम नोर्मेलिटी कहलाती है। जब भेद हो, तब अच्छा काम कर आने पर, खुश हो जाता है वापस थोड़ी देर बाद उल्टा काम हुआ, चाय के प्याले गिर जाएँ चिढ़ जाता है। यानी अबव नॉर्मल, बिलो नॉर्मल होता रहता है। प्रेम, काम नहीं देखता। मूल स्वभाव के दर्शन करता है।

प्रेम यानी यह सारा 'मैं' ही हूँ, 'मैं' ही दिखाई दे रहा हूँ। नहीं तो 'तू' कहना पड़ेगा। यदि 'मैं' नहीं दिखाई देगा तो 'तू' दिखाई देगा। दोनों में से एक तो दिखाई ही देगा न? व्यवहार में बोलना ऐसे कि 'मैं, तू।' पर दिखाई तो 'मैं' ही देना चाहिए न!

आपको समझ में आया 'पोइन्ट ऑफ व्यू'? यह अलग तरह का है। प्रेममूर्ति बन जाना है। सब एक ही लगें, जुदाई लगे ही नहीं। कहेंगे, 'यह हमारा और यह आपका।' पर यहाँ से जाते समय क्या 'हमारा-आपका' रहता है? अर्थात् रोग के कारण जुदाई लगती है। वह रोग निकल जाएगा, तो प्रेममूर्ति बन जाएगा।

प्रेमस्वरूप यानी क्या? कि सभी को अभेदभाव से देखना, अभेदभाव से वर्तन करना, अभेदभाव से चलना, अभेदभाव ही मानना। 'ये अलग हैं' ऐसी-वैसी सभी मान्यताएँ निकाल देनी हैं। वही प्रेमस्वरूप। एक ही परिवार हो ऐसा लगे। जगत् के साथ अभेदता कब कहलाएगी? प्रेमस्वरूप हो जाए तो। सारे जगत् के साथ अभेदता कहलाती है। तब वहाँ पर अन्य कुछ नहीं दिखाई देता, प्रेम के अलावा। हममें वैसा प्रेम प्रकट हुआ है तो कितने ही लोग हमारे प्रेम से ही जीते हैं! निरंतर दादा, दादा, दादा! तो यह प्रेम ऐसी चीज़ है!

-जय सच्चिदानंद

वास्तव में सुख-दुःख क्या है?

दुःख तो किसे कहते हैं? ज्ञानी की संज्ञा में तो दुःख है ही नहीं। लोकसंज्ञा से ही दुःख हैं। ज्ञानी की संज्ञा से दुःख कभी आता ही नहीं और लोकसंज्ञा से तो इधर गया, तो भी दुःख और उधर गया, तो भी दुःख, वहाँ कभी भी सुख नहीं है।

दुःख तो कब कहलाता है? कि खाने गए हों और खाना नहीं मिले और अंदर पेट में आग लगी हो, उसे दुःख कहते हैं। प्यास लगी हो और पीने को पानी नहीं मिले, वह दुःख है। नाक दबाने पर पाँच ही मिनट में दम घुटने लगे वह दुःख है। बाहर से चाहे जितना टेन्शन आ जाए, तो चलेगा, लेकिन भूख-प्यास और हवा का नहीं चलेगा। क्योंकि और सारा टेन्शन तो कितना भी क्यों न आए, सहन होता है, उससे मर नहीं जाते। लेकिन लोग तो बिना काम के टेन्शन लिए फिरते हैं।

प्रश्नकर्ता : एक को सुख पहुँचता है और दूसरे को दुःख ऐसा क्यों?

दादाश्री : सुख-दुःख कल्पित हैं, आरोपित हैं। जिसने कल्पना की कि यह अच्छा है तो सुख लगता है। सामनेवाले को जैसा पसंद हो, वैसा करें, तो पुण्य बंधता है। बुद्धि का आशय बदलता रहता है, लेकिन मरते समय जो आशय होता है, उसके अनुसार परिणाम आता है।

यह इवोल्युशन (उत्क्राँति) है। पहले मील का ज्ञान हो, वह दूसरे मील पर फिर उत्क्राँत होता है। पिछले जन्म में चोरी का अभिप्राय हो गया हो, लेकिन इस जन्म में ऐसा ज्ञान हो कि यह गलत है, तो उसके मन में रहता है कि यह गलत हो रहा है। लेकिन चोरी तो पहले के आशय में सेट हो चुकी थी और इसलिए चोरी होती ही रहती है। एग्रीमेन्ट फाड़ा नहीं जा सकता। जो एग्रीमेन्ट हो चुका है, वह अधूरा नहीं रहता, पूरा होता ही है। उससे पहले मरता नहीं है। हम क्या कहते हैं कि तेरा जो उल्टा आशय है, उसे तू बदल दे। चोरी नहीं करनी है, ऐसा तू बार-बार निश्चय करता रह। जितनी बार चोरी करने का विचार आए, उतनी बार तू उसे जड़ से उखाड़ता रहे, तो तेरा काम होगा। सुल्टा होता जाएगा।

संसार के लोगों को व्यवहार धर्म सिखलाने के लिए हम कहते हैं कि परानुग्रही बन। अपने खुद के बारे में विचार ही न आए। लोककल्याण हेतु परोपकारी बन। यदि आप अपने खुद के लिए खर्च करोगे, तो वह गटर में जाएगा और दूसरों के लिए कुछ भी खर्च करना, वह आगे का एडजस्टमेन्ट है।

शुद्धात्मा भगवान क्या कहते हैं? 'जो दूसरों का ध्यान रखता है, मैं उसका ध्यान रखता हूँ और जो खुद का ही ध्यान रखता है, उसे मैं उसके हाल पर छोड़ देता हूँ।'

परम पूज्य दादाश्री की ज्ञानवाणी में से संकलित

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

17 से 21 जनवरी : अडालज त्रिमंदिर संकुल में विवाहित महात्मा बहनों की पुष्टि के लिए वार्षिक WMHT शिविर हुई। जिसमें 5250 विवाहित बहनों ने हिस्सा लिया। शिविर में पूज्यश्री ने *उपराणां* जैसे विशेष टॉपिक पर बहुत अच्छे से विवरण करके, बहनों को इस दोष से निकलने के लिए मार्गदर्शन दिया। 'समझ से प्राप्त ब्रह्मचर्य' (उतरार्ध) ग्रंथ पर पारायण सत्संग भी हुए। इसके अलावा सत्संग की शुरुआत में स्पेशल बुस्टर वीडियो, ब्रह्मचर्य और कषाय पर आधारित एक्टिविटी, नाटक, भक्ति, गरबा, आप्तपुत्री बहनों के साथ उम्र के अनुसार अलग-अलग ग्रुप में GD देश-विदेश से आए महात्मा बहनों के लिए ग्रुप अनुसार पूज्यश्री के स्पेशल सत्संग भी हुए।

23 से 27 जनवरी : अडालज त्रिमंदिर संकुल में विवाहित भाईयों की पुष्टि के लिए वार्षिक MMHT शिविर का आयोजन हुआ। जिसमें 2600 विवाहित भाईयों ने हिस्सा लिया। शिविर में दो टॉपिक थे। (1) फाइल - 2 से, अपेक्षा की वजह से कषोयों (2) *उपराणां*। इसके अलावा ब्रह्मचर्य (उ) पर पारायण सेशन भी हुए। भारत और विदेश से आए महात्माओं के लिए, पूज्यश्री के अलग-अलग ग्रुप में तीन सत्संग हुए। आप्तपुत्रों द्वारा स्पेशल सत्संग के अलावा GD भी उम्र के अनुसार अलग-अलग ग्रुप में हुए। विविध सेन्टर के महात्माओं ने पाँच अलग-अलग टॉपिक पर असरकारक नाटिका भी प्रस्तुत की, इसके अलावा महात्माओं ने ब्रह्मचर्य डीवीडी सत्संग, सामायिक, गरबा, भक्ति का भी लाभ लिया।

1 से 3 फरवरी : सारंगपुर तीर्थधाम में, उत्तर गुजरात, अहमदाबाद, गांधीनगर और भावनगर जिले के महात्माओं के लिए ज़ोनल शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें 1200 महात्माओं ने हिस्सा लिया। पूज्यश्री के 'रियल-रिलेटिव की भेद रेखा' और 'काम निकाल लो' टॉपिक पर सत्संग हुए। कई महात्माओं ने पूज्यश्री के सामने अपने दोषों को ज़ाहिर करके समाधान पाया। पूज्यश्री के साथ गरबा, भोजन, वॉक व भक्ति के विविध कार्यक्रम हुए। पूज्यश्री BAPS संकुल देखने गए और वहाँ तालिम ले रहे साधकों और संतों के साथ सत्संग किया। पूज्यश्री ने प्रमुख स्वामी की समाधि, स्वामिनारायण मंदिर व प्रसिद्ध कष्टभंजन देव हनुमान जी के मंदिर भी गए और वहाँ के संतों से मिले। आखरी दिन कुंडल गाँव में आए स्वामीनारायण संकुल के नैसर्गिक वातावरण में सत्संग का आयोजन किया गया। शिविरार्थी महात्माओं को पूज्यश्री के चरणस्पर्श दर्शन का भी लाभ प्राप्त हुआ।

9-10 फरवरी : मुंबई-मुलुँड में दो दिन के लिए पूज्यश्री के सत्संग और ज्ञानविधि कार्यक्रम का आयोजन किया गया। GNC के बच्चों ने पूज्यश्री का स्वागत अनोखी तरह से मुंबई की जीवनडोरी के समान लोकल ट्रेन की थीम पर आधारित किया। आगामी जन्म जयंती और प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव को दर्शाते हुए विशेष स्टॉल का भी आयोजन हुआ। जिससे मुमुक्षुओं को जानकारी प्राप्त हुई। 9 फरवरी को दादावाणी ''मैं-तू-वे करते हैं, भ्रांति टालो'' टॉपिक पर विशेष प्रश्नोत्तरी सत्संग हुआ और 10 फरवरी को आयोजित ज्ञानविधि में लगभग 1100 मुमुक्षुओं ने ज्ञान प्राप्त किया।

11 से 13 फरवरी : महाराष्ट्र के अलावा सिर्फ मुंबई के महात्माओं के लिए हिल स्टेशन लोनावला में पूज्यश्री के साथ ज़ोनल शिविर का आयोजन हुआ। जिसमें लगभग 1000 महात्माओं ने हिस्सा लिया। शिविर में विशेष टॉपिक पर सत्संग, आप्तपुत्र सत्संग, स्पे. डीवीडी और पूज्यश्री के साथ डीनर। YMHT द्वारा 'ज्ञान का दुरुपयोग' पर हास्य नाटिका, भक्ति और गरबा वगैरह का कार्यक्रम हुए। महात्माओं ने पूज्यश्री के साथ वॉक और लेक के पास आए कनिफनाथ मंदिर के दर्शन का भी लाभ प्राप्त किया।

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

उत्तरप्रदेश

इलाहाबाद **दिनांक : 28 मार्च** **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9935378914
स्थल : कमला नेहरू इलेक्ट्रो होमियोपेथी मेडिकल इंस्टिट्यूट, महामना शिक्षक भवन, रामबाघ रेल्वे स्टेशन के सामने, रामबाघ.

मिरझापुर **दिनांक : 29 मार्च** **समय :** दोपहर 3 से 5-30 **संपर्क :** 9415288161
स्थल : नारघाट, बालाजी मंदिर के पास, कोरघाट, रस्तोगी केम्पस, मिरझापुर.

मुगलसराई **दिनांक : 30 मार्च** **समय :** शाम 4-30 से 7 **संपर्क :** 7355668137
स्थल : 1478/B, रेल्वे फिल्ड के पास, प्लांट डिपो कोलोनी, मुघलसराय(पं. दीनदयाल उपाध्याय जं.).

वाराणसी **दिनांक : 31 मार्च** **समय :** सुबह 10 से 5 **संपर्क :** 8052603282
स्थल : पिकनिक मैदान, मुख्य बुद्ध मंदिर, चिड़िया घर के पास, सारनाथ.

वाराणसी **दिनांक : 1 अप्रैल** **समय :** सुबह 11 से 1-30 **संपर्क :** 9415814640
स्थल : ज़्ह्वारेश्वर महादेव मंदिर, J 26/6, बागेश्वरी देवी रोड, जेत पूरा, कमल गढा.

वाराणसी **दिनांक : 1 अप्रैल** **समय :** शाम 5 से 7-30 **संपर्क :** 9794861421
स्थल : संस्थान होल, DLW सिनेमा के पास, DLW, भुलानपुर, वाराणसी.

गोरखपुर **दिनांक : 2 अप्रैल** **समय :** शाम 5 से 8 **संपर्क :** 7800656738
स्थल : EWS-29, शास्त्री नगर कोलोनी, राजेंद्र नगर, गोरखनाथ, गोरखपुर.

खुशीनगर **दिनांक : 3 अप्रैल** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 6388218155
स्थल : महोल्ला - गरुण नगर(डॉ. ऐ. के. सिंह के पास), गॉव : पडरौना, खुशीनगर.

महाराजगंज **दिनांक : 4 अप्रैल** **समय :** शाम 4 से 7 **संपर्क :** 9793353018
स्थल : पोस्ट : नटवा जंगल, भटहट बाजार थाना, श्याम देऊरवा, जिल्ला : महाराजगंज.

गोरखपुर **दिनांक : 7 अप्रैल** **समय :** शाम 5 से 8 **संपर्क :** 7800656738
स्थल : EWS-29, शास्त्री नगर कोलोनी, राजेंद्र नगर के पास मे, गोरखनाथ, गोरखपुर.

चंदीगढ़

चंदीगढ़ **दिनांक : 21 अप्रैल** **समय :** सुबह 11 से 1 **संपर्क :** 9780732237
स्थल : गढ़वाल भवन, साईं बाबा मंदिर के पास, सेक्टर-29.

पंजाब

जालंधर **दिनांक : 14 अप्रैल** **समय :** सुबह 10 से 1 **संपर्क :** 9779233493
स्थल : दादा भगवान सत्संग सेन्टर, C/O. ईगल प्रकाशन, सेन्ट्रल मिल कंपाउंड, पुराना रेल्वे रोड, दामोरिया पूल के पास.

बिहार

पटना **दिनांक : 5 अप्रैल** **समय :** शाम 7 से 9 **संपर्क :** 9431015601
स्थल : जैन भवन, गोविन्द मित्र रोड, पटना.

मुझफ्फरपुर **दिनांक : 6-7 अप्रैल** **समय :** सुबह 10 से 5 **संपर्क :** 9608030142
स्थल : प्रतिमा सदन, खाबरा शिव मंदिर के पास, NH-28, मुजफ्फरपुर

छत्तीसगढ़

भिलाई **दिनांक : 5-6 अप्रैल** **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9407982704
स्थल : दादा भगवान सत्संग सेन्टर, मरोड़ा वोटर टेंक, मैत्री बाघ (गार्डन) चोक, भिलाई, दुर्ग.

रायपुर **दिनांक : 7 अप्रैल** **समय :** सुबह 10 से 12 **संपर्क :** 9329523737
स्थल : दादा भगवान सेंटर, गोंदवारा, रायपुर.

रायपुर **दिनांक : 8 अप्रैल** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9329523737
स्थल : आदर्श बाल समाज, शिव मंदिर के सामने, गाँव : गिरौड.

बिलासपुर **दिनांक : 9 अप्रैल** **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9425530470
स्थल : बी - १९०, अग्नेय नगर, खान कोचिंग के पास, भारतीय नगर, बिलासपुर.

आसाम

गुवाहाटी **दिनांक : 25 मार्च** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9085405087
स्थल : घर नं. 17, बाय लेंड-2, श्री नगर, नलिनी बाला देवी रोड, ख्रिस्तियाँ बस्ती, बस स्टॉप, गुवाहटी.

तेजपुर **दिनांक : 26 मार्च** **समय :** दोपहर 3-30 से 5-30 **संपर्क :** 9101753686
स्थल : हिन्दुस्तानी दुर्गा मंदिर, जहाज घाट रोड, भैरवपद, तेजपुर.

लेडो **दिनांक : 28 मार्च** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 8638802416
स्थल : मिलन मंदिर, स्टिलवेल रोड, लिडो, तिनसुकिया.

तीनसुकीया **दिनांक : 29 मार्च** **समय :** दोपहर 3 से 5 **संपर्क :** 9954224104
स्थल : दुर्गा दत्ता लोहिया, M.E. स्कुल रंगपुरिया, तीनसुकीया.

तीनसुकीया **दिनांक : 30 मार्च** **समय :** दोपहर 3-30 से 5-30 **संपर्क :** 9954224104
स्थल : आनंद मोहन विद्यापीठ, H.S. स्कुल गुंजन, तीनसुकीया.

गुवाहाटी **दिनांक : 31 मार्च** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9864020603
स्थल : श्री जलाराम मंदिर, फटा शील, अम्बारी, ऐ के देव रोड, काली मंदिर के पास, गुवाहाटी.

गुवाहाटी **दिनांक : 1 अप्रैल** **समय :** दोपहर 3-30 से 5-30 **संपर्क :** 9085405087
स्थल : सरेस्वर दास हाउस, ६ माइल, जयानगर चारियाली रोड, Food.com रेस्टोरेन्ट के पास, गुवाहाटी.

नलबारी **दिनांक : 2 अप्रैल** **समय :** सुबह 10 से 12 **संपर्क :** 9954875897
स्थल : धमधमा PHED ऑफिस के पास मे, धमधमा गॉव.

बक्सा **दिनांक : 2 अप्रैल** **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9706896109
स्थल : संतापारा आंचलिक शिव मंदिर, थामा, बक्सा.

ईथलबारी **दिनांक : 3 अप्रैल** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9382899417
स्थल : पतंजलि आरोग्य केन्द्र, डबल रास्ता, चेक पोस्ट - ईथलबारी, जिल्ला - जलपाईगुड़ी.

पश्चिम बंगाल

कोलकाता **दिनांक : 11 अप्रैल** **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9830080820
स्थल : 78/1 3rd फ्लोर, नेताजी सुभाष चंद्र बोज रोड, रेजिंट कोलोनी, मलांचा सिनमा के सामने, टॉलीगंज.

कोलकाता **दिनांक : 12 अप्रैल** **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9830080820
स्थल : श्री स्थानकवासी जैन भवन, 2/C, नेताजी सुभाष रोड, बिल्डिंग नं. 12, शांतिनगर, लिलुआ.

कोलकाता **दिनांक : 13 अप्रैल** **समय :** सुबह 9-30 से 12-30 **संपर्क :** 9830080820
स्थल : बिरला जुट फेक्टरी, बिरलापुर ग्राउन्ड, बिरलापुर.

कोलकाता **दिनांक : 13 अप्रैल** **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9830080820
स्थल : 12/1/2B, मनोहर पुकुर रोड, सनफ्लावर एपार्टमेंट, कालीघाट.

त्रिपुरा

अगरतला **दिनांक : 23 मार्च** **समय :** सुबह 10 से 12-30 **संपर्क :** 9436902835
स्थल : जतनबारी टाउन हॉल, गोमती, अमरपुर, त्रिपुरा.

दादावाणी

अगरतला **दिनांक : 24 मार्च** **समय :** सुबह 11 से 1 **संपर्क :** 9436902835
स्थल : राजर्षि टाउन हॉल, नॅशनल हाई-वे के पीछे, एस.पी. ऑफिस के सामने, उदयपुर, त्रिपुरा.

अगरतला **दिनांक : 24 मार्च** **समय :** शाम 4 से 7 **संपर्क :** 8787768775
स्थल : रामठाकुर सेवा मंदिर, शालगरा, टिपानिया, मधुपुर, त्रिपुरा.

मध्यप्रदेश

अंजड़ **दिनांक : 12 अप्रैल** **समय :** रात 8 से 10 **संपर्क :** 9843652143
स्थल : अन्नपुर्णा भवन पाटीदार समाज, बायपास रोड, अंजड (मध्यप्रदेश).

इन्दौर **दिनांक : 13 अप्रैल** **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 6354602400
स्थल : दादा दर्शन, 89बी, राजेन्द्र नगर, टांकी होल रोड, इन्दौर (मध्यप्रदेश).

इन्दौर **दिनांक : 14 अप्रैल** **समय :** सुबह 10 से 5 **संपर्क :** 6354602400
स्थल : दादा दर्शन, 89बी, राजेन्द्र नगर, टांकी होल रोड, इन्दौर (मध्यप्रदेश).

उज्जैन **दिनांक : 15 अप्रैल** **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9425195647
स्थल : भारतीय ज्ञान पीठ स्कूल, लोकमान्य तिलक सायन्स एन्ड कोमर्स कोलेज के सामने, माधव नगर रेल्वे स्टेशन.

ग्वालियर **दिनांक : 16 अप्रैल** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9926265406
स्थल : के.एस. मेमोरीयल हाई स्कूल, गायत्री विहार, पिन्टुपार्क, मुरार, ग्वालियर (मध्यप्रदेश).

ग्वालियर **दिनांक : 17 अप्रैल** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9926265406
स्थल : चौधरी गेस्ट हाउस, धरमवीर पेट्रोलपंप के सामने, एयरफोर्स रोड, ग्वालियर (मध्यप्रदेश).

जबलपुर **दिनांक : 19 अप्रैल** **समय :** शाम 5 से 8 **संपर्क :** 9425160428
स्थल : समदरिया मोल, 4th फ्लोर, जलसा मोल, माता गुजरी कोलेज के पास, सिविक सेंटर, जबलपुर.

भोपाल **दिनांक : 20 अप्रैल** **समय :** सुबह 11 से 1 **संपर्क :** 9425190511
स्थल : डी-1 सुरेन्द्र गार्डन, भागसेवानिया थाने के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल (मध्यप्रदेश).

भोपाल **दिनांक : 20 अप्रैल** **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9826926444
स्थल : जनक विहार कोम्प्लेक्स, एयरटेल ओफिस के सामने, मालविया नगर, भोपाल (मध्यप्रदेश).

भोपाल **दिनांक : 21 अप्रैल** **समय :** सुबह 11 से 1 तथा दोपहर 3 से 5 **संपर्क :** 9826926444
स्थल : कुकुट विकास निगम, सभागृह मेनीट चौराहे के पास, कोलार रोड, भोपाल (मध्यप्रदेश).

महाराष्ट्र

सतारा (कराड) **दिनांक : 2 अप्रैल** **समय :** सुबह 11 से 2 **संपर्क :** 7588683603
स्थल : श्री बाबूभाई पद्मश्री शाह सांस्कृतिक भवन, विठ्ठल चौक, गुरुवर पेठ, कराड.

नागपुर **दिनांक : 29 मार्च** **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9970059233
स्थल : श्री सौराष्ट्र दशा श्रीमाली भवन, खारा दवाखाना, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने, सेन्ट्रल एवेन्यू, लकडगंज.

आर्वी **दिनांक : 30 मार्च** **समय :** सुबह 11 से 12-30 **संपर्क :** 8830697045
स्थल : दादा भगवान सत्संग सेन्टर, मारोती वोर्ड, मूनलाइट फोटो स्टूडियो के पास, आर्वी.

दरियापुर **दिनांक : 1 अप्रैल** **समय :** शाम 6 से 7-30 **संपर्क :** 7218133523
स्थल : शेतकरी सदन, अकोट रोड, बनोड़ा, दरियापुर.

मूर्तिजापुर **दिनांक : 2 अप्रैल** **समय :** सुबह 10 से 11 **संपर्क :** 9422568192
स्थल : दादा भगवान सत्संग सेन्टर, वोर्ड नं. १०, करसपूरा, मुर्तिजापुर.

अकोला **दिनांक : 2 अप्रैल** **समय :** शाम 5-30 से 7-30 **संपर्क :** 9422403002
स्थल : 'अम्बिका', बजरंग भवन के सामने, श्रोगी प्लोट्स, अकोला.

दादावाणी

जलगाँव **दिनांक : 4 अप्रैल** **समय :** शाम 5 से 7-30 **संपर्क :** 9420942944
स्थल : ओमकार रिसोर्ट्स, D.S.P. चोक, HDFC बेंक के पास में, महाबल रोड, जलगांव.

धूले **दिनांक : 4 अप्रैल** **समय :** सुबह 10 से 12-30 **संपर्क :** 9420942944
स्थल : भगवान झूलेलाल मंदिर, कुमार नगर, साकरी रोड, धुले.

औरंगाबाद **दिनांक : 5 अप्रैल** **समय :** शाम 5-30 से 8 **संपर्क :** 8308008897
स्थल : प्लाट नं. 74, N3, सिडको, औरंगाबाद.

नासिक **दिनांक : 6 अप्रैल** **समय :** शाम 5 से 7-30 **संपर्क :** 9021232111
स्थल : पाटीदार भवन, पूर्णिमा बस स्टॉप, द्वारका, नासरडी, नासिक.

गोवा

म्हापसा **दिनांक : 6 अप्रैल** **समय :** दोपहर 3-30 से 5-30 **संपर्क :** 8698745655
स्थल : म्हापसा रेसीडेंसी, बस स्टेंड के पास, म्हापसा, गोवा.

मडगाँव **दिनांक : 7 अप्रैल** **समय :** दोपहर 3-30 से 5-30 **संपर्क :** 8698745655
स्थल : गुजराती समाज होल, अकेम, मारुती मंदिर के सामने, मडगाव, गोवा.

कर्णाटक

बेंगलुरु **दिनांक : 29 मार्च** **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9590979099
स्थल : श्री कड़वा पाटीदार समाज, १०९/१, बाहरी रिंग रोड, बनासवाडी, विजया बेंक कोलोनी, कल्याण नगर.

बेंगलुरु **दिनांक : 30 मार्च** **समय :** शाम 5-30 से 8 **संपर्क :** 9590979099
स्थल : आदित्य कन्वेंशन होल 1, नागरभावी 3rd मेईन रोड, विजया बेंक के पास, मुदालापाल्या.

बेंगलुरु **दिनांक : 31 मार्च** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9590979099
स्थल : महाराष्ट्र मंडल, 2nd मेईन रोड, गाँधीनगर, बेंगलुरु.

हुबली **दिनांक : 1 अप्रैल** **समय :** शाम 5-30 से 8 **संपर्क :** 9513216111
स्थल : गुजरात भवन, देशपांडे नगर, हुबली.

बेलगाम **दिनांक : 4 अप्रैल** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9945894202
स्थल : लक्ष्मीनारायण हॉल, मैन रोड, शाहापुर पोलिस स्टेशन के सामने, वडगांव, बेलगाम.

नेपाल

बुटवल **दिनांक : 6 अप्रैल** **समय :** सुबह 12 से 5 **संपर्क :** +977-9847042399
स्थल : हिमाली टेस्ट & रेस्ट, कलिकानगर, रुपन्देही, बुटवल.

उत्तर भारत

बिलासपुर	**दि : 10 अप्रैल**	**संपर्क :** 9425530470	**लुधियाणा**	**दि : 18 अप्रैल**	**संपर्क :** 9465051163
झारखंड	**दि : 11 अप्रैल**	**संपर्क :** 9931538777	**मैनपुरी**	**दि : 18-19 अप्रैल**	**संपर्क :** 7906704099
जालंधर	**दि : 12-13 अप्रैल**	**संपर्क :** 9779233493	**चंदीगढ़**	**दि : 19-20 अप्रैल**	**संपर्क :** 9780732237
झांसी	**दि : 12 अप्रैल**	**संपर्क :** 7985652381	**अलीगढ़**	**दि : 20 अप्रैल**	**संपर्क :** 9411416102
कानपुर	**दि : 13-14 अप्रैल**	**संपर्क :** 9452525981	**आगरा**	**दि : 21-22 अप्रैल**	**संपर्क :** 9258744087
उन्नाव	**दि : 15 अप्रैल**	**संपर्क :** 9452525981			
धरमशाला	**दि : 15-16 अप्रैल**	**संपर्क :** 9805254559			
लखनऊ	**दि : 16-17 अप्रैल**	**संपर्क :** 8090177881			
अमृतसर	**दि : 17 अप्रैल**	**संपर्क :** 9872298125			

पश्चिम भारत

भुवनेश्वर	**दि : 5 अप्रैल**	**संपर्क :** 7008920454			
भुवनेश्वर	**दि : 6 अप्रैल**	**संपर्क :** 6370340146			
भुवनेश्वर	**दि : 7 अप्रैल**	**संपर्क :** 8200023538			
कटक	**दि : 8 अप्रैल**	**संपर्क :** 8480800788			

भुवनेश्वर	दि : 9 अप्रैल	संपर्क : 9937215347	**पूर्वी भारत**		
कोलकाता	दि : 14 अप्रैल	संपर्क : 9830080820	अजमेर	दि : 29-30 मार्च	संपर्क : 9460611890
मध्य तथा दक्षिण भारत			जयपुर	दि : 31 मार्च	संपर्क : 8890357990
पूणे	दि : 31 मार्च	संपर्क : 7218473468	जयपुर	दि : 1 अप्रैल	संपर्क : 8890357990
अमरावती	दि : 31 मार्च	संपर्क : 9403411471	चितौरगढ़	दि : 5-6 अप्रैल	संपर्क : 9414395914
सतारा	दि : 1 अप्रैल	संपर्क : 7350998503	उदयपुर	दि : 7 अप्रैल	संपर्क : 9462436601
कोल्हापुर	दि : 3 अप्रैल	संपर्क : 9960787776	जोधपुर	दि : 12-13 अप्रैल	संपर्क : 9828360301
बेलगाम	दि : 3 अप्रैल	संपर्क : 9945894202	पाली	दि : 14-15 अप्रैल	संपर्क : 9461251542
सांगली	दि : 4 अप्रैल	संपर्क : 9423870798	जैतारण	दि : 16-17 अप्रैल	संपर्क : 9413172239
सोलापुर	दि : 5 अप्रैल	संपर्क : 8421899781	बाढ़मेर	दि : 20-21 अप्रैल	संपर्क : 9314209457
नासिक	दि : 7 अप्रैल	संपर्क : 9021232111	**नेपाल**		
जबलपुर	दि : 18-19 अप्रैल	संपर्क : 9425160428	बुटवल	दि : 5 अप्रैल	संपर्क : +977-9847042399

समय और स्थल की जानकारी के लिए उपर दिए गए नंबर पर संपर्क करे।

भारत में पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शनि सुबह 8-30 से 9, रवि सुबह 6-30 से 7
- **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ शाम 6-30 से 7 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर सोम से शनि रात 9-30 से 10 (हिन्दी में)
- **'उड़ीसा प्लस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)
- **'दूरदर्शन'-चंदना** पर सोम और शुक्र रात 7-30 से 8 (कन्नड़ में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन' गिरनार** पर हर रोज़ रात 10 से 10-30 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन'-गिरनार** हर रोज़ पर सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ दोपहर 2-30 से 3 तथा रात 8 से 9 (गुजराती में)

USA-Canada
- **'SAB-US'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 EST
- **'Rishtey-USA'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा 8 से 8-30 (हिन्दी में) EST
- **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)
- **'SAB-UK'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 - Western European Time (6.30am-7am GMT)
- **'Rishtey-UK'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 Western European Time (6am-6-30am GMT)
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)

Singapore ✦ **'SAB- International'** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (हिन्दी में)

Australia ✦ **'SAB- International'** पर हर रोज़ सुबह 11-30 से 12 (हिन्दी में)

New Zealand ✦ **'SAB- International'** पर हर रोज़ दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

CAN-Fiji-NZ-Sing.-SA-UAE ✦ **Rishtey-Asia'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा 8 से 8-30 (हिन्दी में) EST

USA-UK-Africa-Aus. ✦ **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30

Atmagnani Pujya Deepakbhai's Germany - UK Satsang Schedule (2019)

UK: + 44-330-111-DADA (3232), email:info@uk.dadabhagwan.org, Germany: +49 700 32327474

Date	From	to	Event	Venue
25-Mar-19	08:00 PM	10:00 PM	SATSANG	Wolf-Ferrari-Haus Rathausplatz 2, 85521 Ottobrunn, Munich, **Germany**
26-Mar-19	07:00 PM	10:00 PM	GNAN VIDHI	
29 Mar - 1 Apr	All day		Akram Vignan Event	**Willingen, Germany**
03-Apr-19	07:00 PM	09:30 PM	Aptaputra Satasang	Indian Association Oldham Schoefield Street, Hathershaw, Oldham, OL8 1QJ
04-Apr-19	06:00 PM	10:00 PM	GNAN VIDHI	
05-Apr-19	07:30 PM	10:00 PM	SATSANG	**Maher Centre,** 15 Ravensbridge Drive, Leicester, LE4 0BZ
06-Apr-19	10:30 AM	12:30 PM	Aptaputra Satasang	
06-Apr-19	07:30 PM	10:00 PM	SATSANG	
07-Apr-19	10:30 AM	12:30 PM	Aptaputra Satasang	
07-Apr-19	02:30 PM	07:00 PM	GNAN VIDHI	
10-Apr-19	07:30 PM	10:00 PM	Aptaputra Satasang	**Hariben Bachubhai Nagrecha Hall,** 198-202 Leyton Road, London, E15 1DT
11-Apr-19	06:00 PM	10:00 PM	GNAN VIDHI	
12-Apr-19	07:30 PM	10:00 PM	SATSANG	Harrow Leisure Centre, Christchurch Avenue, Middlesex **Harrow,** HA3 5BD
13-Apr-19	10:30 AM	12:30 PM	Aptaputra Satasang	
13-Apr-19	07:30 PM	10:00 PM	SATSANG	
14-Apr-19	08:30 AM	12:30 PM	Small Swami Pratishta	
14-Apr-19	02:30 PM	07:00 PM	GNAN VIDHI	
15-Apr-19	07:30 PM	10:00 PM	SATSANG	
18-22 Apr	All day		UK SHIBIR	**Pre-registration required**

Form No. 4 (Rule No. 8)

Information about 'Dadavani' Hindi Magazine

1. **Place of Publication :** Simandhar City, Adalaj, Dist - Gandhinagar, Pin - 382421
2. **Periodicity of Publication :** Monthly
3. **Name of Printer :** Amba Offset, **Nationality :** Indian,
   Address : B-99, GIDC, Sector-25, Gandhinagar – 382025.
4. **Name of Publisher :** Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, **Nationality :** Indian,
   Address : Simandhar City, Adalaj, Dist - Gandhinagar, Pin - 382421
5. **Name of Editor :** Dimple Mehta, **Nationality :** Indian, **Address :** same as above.
6. **Name of Owner :** Mahavideh Foundation (Trust), **Nationality :** Indian,
   Address : same as above.

I, Dimple Mehta hereby declare that the above stated information is correct to my knowledge and belief.

Date : 15-03-2019

sd/-
Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
(Signature of Publisher)

अडालज त्रिमंदिर में हिन्दी सत्संग शिविर - वर्ष 2019

8 से 12 मई - सत्संग

9 मई - पूज्यश्री के जन्मदिन पर विशेष कार्यक्रम

11 मई - ज्ञानविधि

सूचना : यह शिविर गुजराती भाषा नहीं जानने वाले मुमुक्षु-महात्माओं के लिए साल में एक बार हिन्दी में विशेष रूप से आयोजित की जाती है। **इस शिविर के लिए 14 अप्रैल 2019 तक रजिस्ट्रेशन होगा।** निम्नलिखित सत्संग केन्द्रों में से अपने नज़दीकी सत्संग केन्द्र पर अपना रजिस्ट्रेशन करवा सकते है और यदि आपके नज़दीक में कोई सत्संग केन्द्र नहीं है, तो अडालज मुख्य सत्संग केन्द्र के रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. **079-39830400** पर (सुबह 9-30 से 1 और दोपहर 3 से 6) अपना रजिस्ट्रेशन करवा सकते है। रजिस्ट्रेशन कराने के बाद यदि आप किसी कारणवश नहीं आनेवाले हो, तो अपना रजिस्ट्रेशन केन्सल करवाना न भूलें।

दिल्ली	: 9810098564	**भुवनेश्वर**	: 8763073111	**नागपुर**	: 9970059233
जलंधर	: 9814063043	**रायपुर**	: 9329644433	**जलगाँव**	: 9420942944
वाराणसी	: 9795228541	**भिलाई**	: 9407982704	**मुंबई**	: 9821996663
जयपुर	: 8290333699	**इन्दौर**	: 6354602400	**पूणे**	: 7218473468
पाली	: 9461251542	**भोपाल**	: 6354602399	**हैद्राबाद**	: 9885058771
पटना	: 7352723132	**जबलपुर**	: 9425160428	**बंगलूर**	: 9590979099
मुजफ्फरपुर	: 7209956892	**औरंगाबाद**	: 8308008897	**हुबली**	: 9513216111
कोलकता	: 9830080820	**अमरावती**	: 9422915064	**चेन्नई**	: 7200740000

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

सुरत

18 मई (शनि) रात 8 से 11 - **सत्संग** तथा **19 मई** (रवि) शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**

स्थल : इन्डोर स्टेडियम, लोर्डस कोन्वेन्ट स्कूल के सामने, मेघदूत सोसायटी के पास, अठवालाईन्स. **संपर्क :** 9574008007

20 मई (सोम) रात 8 से 11 - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : गांधी स्मृति भवन, टीमलीयावाड रोड, महावीर होस्पीटल के पीछे, नानपुरा, सुरत. **संपर्क :** 9574008007

वडोदरा

27 मई (सोम) शाम 7-30 से 10-30 - **सत्संग** तथा **28 मई** (मंगल) शाम 7 से 10-30 - **ज्ञानविधि**

29 मई (बुध) शाम 7-30 से 10-30 - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : अकोटा स्टेडियम, अकोटा, वडोदरा. **संपर्क :** 9924343335

PMHT (पेरेन्ट्स महात्मा) शिविर

5 से 9 जून (बुध - रवि) - **सत्संग समय की घोषणा बाकी**

सूचना : यह शिविर ज्ञान लिए हुए विवाहित महात्माओं के लिए ही रखी गई है। शिविर रजिस्ट्रेशन संबंधित जानकारी आने वाले अंक में दी जाएगी। **रेल्वे टिकट रिझर्वेशन चार महिने पहले एडवान्स में होता है, इसलिए यह जानकारी आपको टिकट बुक करने हेतु दी जा रही है।**

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : (079) 39830100, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **गोधरा :** 9723707738, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** (02822)297097, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा:** 9574001557
अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद: (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830080820
यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

मार्च 2019
वर्ष-14 अंक-5
अखंड क्रमांक - 161

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
LPWP Licence No. PMG/HQ/36/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

दादा का परमात्म प्रेम

अगर वह मेरे साथ झगड़ा करे फिर भी मैं जानता हूँ, उसके प्रेम को पहचानता हूँ, झगड़े की कीमत नहीं है, प्रेम की कीमत है। तेरे प्रति मेरा प्रेम कभी कम हुआ था? एक दिन भी नहीं? हमारा प्रेम कम नहीं होता। जो प्रेम कम-ज्यादा होता है वह आसक्ति कहलाती है और जो कम-ज्यादा नही होता, वह परमात्म प्रेम है। जो कम-ज्यादा नहीं होता उस प्रेम में खुद परमात्मा हैं। परमात्मा को और कहीं ढूँढने नहीं जाना है! आप दादा का अपमान करके फिर उनका प्रेम देखो, कैसा दिखाई देता है वह! अगर प्रेम कम नहीं हुआ है तो समझना कि ये परमात्मा ही हैं। दादा परमात्मा नहीं हैं, वह प्रेम ही परमात्मा है। दुनिया में ऐसा कहीं पर भी देखने को नहीं मिलेगा।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.